A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 25 मई, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 257 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

हरियाणा : '400 पार' से दलितों में आरक्षण खत्म होने की चिंता

सुशील मानव

इस पर जारी बहस के बीच कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरी बार सत्ता में आने पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) संविधान बदल देगी, विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, इसे हरियाणा के दलितों के बीच एक मुद्दा बना रही है। दलित वोट भाजपा के लिए महत्वपूर्ण हैं, न केवल एनडीए के लिए 400 से अधिक सीटें हासिल करने के अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, बल्कि 2014 और 2019 के आम चुनावों से अपनी सफलता को दोहराने के लिए भी।

इस साल मार्च में अपने निर्वाचन क्षेत्र उत्तर कन्नड़ में एक रैली को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद अनंत कुमार हेगड़े ने दावा किया कि उनकी पार्टी को 'कांग्रेस द्वारा हिंदू धर्म को अपमानित करने के लिए किए गए जोड़ और विकृतियों को खत्म करने' के लिए 400 से अधिक सीटों की जरूरत है। जबकि भाजपा ने खुद को भाषण से दूर कर लिया और हेगड़े को मौजूदा लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए टिकट देने से इनकार कर दिया, गोविल, मिर्धा और लल्लू सिंह जैसे अन्य पार्टी नेताओं ने भी इसी तरह के दावे किए। तब से भाजपा – प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ- विपक्षी कांग्रेस पर दलितों का आरक्षण छीनकर मुसलमानों को देने की कोशिश करने का आरोप लगाकर इसका मुकाबला करने की कोशिश कर रही है, लेकिन ऐसा लगता है कि नुकसान पहले ही हो चुका है- हरियाणा के विभिन्न दलित नेताओं के अनुसार, राज्य में अनुसूचित जातियों के बीच डर है कि भाजपा उन्हें दिए गए मौजूदा आरक्षण को खत्म करने पर विचार कर सकती है।

दलित नेताओं और कार्यकर्ताओं के अनुसार, विभिन्न कारक इस आशंका को जन्म दे रहे हैं- जिसमें यह धारणा भी शामिल है कि देश में आरक्षण विरोधी भावनाएं बढ़ रही हैं, साथ ही यह विचार भी शामिल है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989, का दुरुपयोग किया जा रहा है। रेवाड़ी के एक वकील और दलित कार्यकर्ता राजवंत दहिनवाल ने बताया, 'पहले भी कई बार संविधान में संशोधन किए गए हैं, लेकिन यह पहली बार है कि भाजपा के सांसदों और लोकसभा उम्मीदवारों ने खुद रिकॉर्ड पर कहा है कि संविधान को बदलने के लिए पार्टी को 400 से अधिक सीटों की जरूरत है। इससे एससी और एसटी समूहों में डर फैल गया है कि अगर भाजपा बड़े जनादेश के साथ फिर से सत्ता में आती है तो उन्हें दिया गया आरक्षण बरकरार नहीं रखा जाएगा।'

हरियाणा में भाजपा के एससी मोर्चा के महासचिव सुरेश दानोदा ने कहा, 'संविधान को ऐसे ही नहीं बदला जा सकता। पीएम नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने बार-बार कहा है कि दलितों के लिए चिंता का कोई कारण नहीं है।' लेकिन दलित नेता इस बात से कोसों दूर हैं। फतेहाबाद में वाल्मीकि समुदाय के नेता शम्मी रत्ती के अनुसार, ये चिंताएं केवल आरक्षण खोने से परे हैं और हरियाणा की अनुसूचित जातियों के बीच इसके लाभों के असमान वितरण की एक अधिक बुनियादी समस्या से उपजी हैं। रत्ती ने भजन लाल सरकार के तहत राज्य में लागू की गई अधिक स्तरीय आरक्षण प्रणाली की वकालत करते हुए कहा, 'अनुसूचित जातियों में वाल्मीकि, धनक, बाजीगर, सांसिस, देहास और सपेरा जैसी कई वंचित जातियां वर्तमान आरक्षण का लाभ पाने में सक्षम नहीं हैं, क्योंकि इन लाभों पर बड़े पैमाने पर रविदासिया जैसी सामाजिक रूप से बेहतर स्थिति वाली जातियों का कब्ज़ा है।' 1994 में, भजन लाल सरकार ने अनुसूचित जाति की आबादी को दो श्रेणियों- ए और बी में विभाजित किया- ब्लॉक ए वंचित जातियों को अधिमान्य आधार पर 50 प्रतिशत आरक्षित सीटों की पेशकश की। हालांकि, इसे पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट में चुनौती दिए जाने के बाद रद्द कर दिया गया था। 'उन्हें उम्मीद है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी का 'जितनी जिसकी आबादी, उतना उसका हक' का वादा वंचित एससी जातियों की मदद कर सकता है।

अनुसूचित जातियां हरियाणा की आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं- 2011 की जनगणना के अनुसार, वह राज्य के 2.53 करोड़ लोगों में से 20.2 प्रतिशत हैं। राज्य में दलित वोट अहम हैं। उदाहरण के लिए 2019 के हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित 17 सीटों में से पांच पर जीत हासिल की-2014 में जीती गई नौ सीटों में से दो कम। दूसरी ओर, कांग्रेस ने 2014 में अपनी जीती हुई चार सीटों की तुलना में सात सीटें जीतीं। कार्यकर्ताओं के अनुसार, छह कारण हैं कि राज्य के दलित समूह अपने डर को दूर करने के ठोस प्रयासों के बावजूद भाजपा से आशंकित हैं। पहला, देश में आरक्षण विरोधी भावना में कथित वृद्धि। इसके लिए एक अन्य वकील और दलित कार्यकर्ता, रजत कलसन, जंतर मंतर पर 2018 के आरक्षण विरोधी विरोध प्रदर्शन का हवाला देते हैं, जहां आरक्षण विरोधी पार्टी नामक एक अल्पज्ञात आरक्षण विरोधी समूह ने संविधान की प्रतियां जलाई थीं। उन्होंने कहा कि दलितों ने इसे वास्तव में संविधान बदलने से पहले भाजपा द्वारा 'परीक्षण' के रूप में देखा। संविधान के इस दुरुपयोग का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। ये सब दिल्ली पुलिस की मौजूदगी में हुआ। यह डर अपने बजट भाषण के दौरान प्रधानमंत्री के वादे से और भी बढ़ गया था कि उनकी सरकार अपने तीसरे कार्यकाल के दौरान 'बड़े फैसले' करेगी, साथ ही अन्य भाजपा नेताओं द्वारा की गई टिप्पणियों ने भी आग में घी डालने का काम किया। 'यह भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के प्रमुख सरकारी भर्ती वेब पोर्टल- हरियाणा कौशल रोजगार निगम (एचकेआरएन)- के दो साल बाद राज्य में विवाद का मसला बन गया। 2021 में लॉन्च किए गए वेब पोर्टल का उद्देश्य विभिन्न सरकारी विभागों, बोर्डों और विश्वविद्यालयों में संविदा कर्मचारियों को नियुक्त करना है। अनुभवी कांग्रेसी और पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर हुड्डा जैसे विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया है कि इस प्रणाली का उद्देश्य अन्य चीज़ों के अलावा 'आरक्षण को खत्म करना' था। दलित कार्यकर्ताओं का भी मानना है कि यही मामला है, क्योंकि एचकेआरएन के तहत भर्ती के लिए चयन मानदंड में जाति-आधारित आरक्षण नहीं है। डर है कि भाजपा सरकार, राज्य की पुलिस के माध्यम से यह धारणा पैदा कर रही है कि दलितों और आदिवासी लोगों के खिलाफ घृणा अपराधों को रोकने के लिए बनाए गए एससी/एसटी अधिनियम का दुरुपयोग किया जा रहा है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पीएम मोदी ने करतारपुर साहिब का जिक्र कर खेला बड़ा दांव

पटियाला की रैली में पीएम नरेंद्र मोदी ने करतारपुर साहिब को लेकर कांग्रेस को घेरा

- 1971 के भारत-पाक युद्ध में विजेता की तरह समझौते नहीं का परोक्ष आरोप भी जड़ा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पटियाला की रैली में पीएम नरेंद्र मोदी ने सिख वोटरों के नब्ज पर हाथ रखने की कोशिश की। उन्होंने रैली में करतारपुर कॉरिडोर को भारत में नहीं होने पर अफसोस जाहिर किया। पीएम मोदी ने लोगों को याद दिलाई कि अगर 1971 के युद्ध में विजयी होने के बाद तत्कालीन कांग्रेस की सरकार मोलतोल करती तो करतारपुर साहिब भारत का हिस्सा होता। उन्होंने कहा कि 1971 के भारत-पाक युद्ध में 90 हजार से अधिक पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया था। अगर उस दौर में वह सत्ता में होते तो पाकिस्तानी सैनिकों की रिहाई से पहले करतारपुर साहिब ले लेते। पाकिस्तानी सेना के जुल्मों से तंग आकर 1970 की शुरुआत में ही पूर्वी पाकिस्तान के शरणार्थी भारत में आने लगे थे। इस बीच अलग बांग्लादेश की मांग को लेकर आवामी लीग नेता शेख

मुजीबुर्रहमान की मुक्तिवाहिनी ने पाकिस्तानी सेना के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। शरणार्थियों की बढ़ती संख्या के बाद भारत ने इसमें हस्तक्षेप किया और पाकिस्तान ने युद्ध की घोषणा कर दी। दिसंबर 1971 में 13 दिनों तक संघर्ष चला। भारतीय सेना ने 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों और रजाकारों को सरेंडर करने के लिए बाध्य किया। 16 दिसंबर को जनरल नियाजी ने सरेंडर पत्र पर दस्तखत किए और नया बांग्लादेश के जन्म के साथ ही पाकिस्तानी सैनिकों की रिहाई शुरु हो गई। करीब 6 महीने बाद दो जुलाई 1972 को भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान पीएम जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच शिमला समझौता हुआ। जीत के बाद भी भारत ने लाइन ऑफ कंट्रोल को सितंबर 1971 की स्थिति को मान्यता दी। साथ ही यह तय किया गया कि दोनों देश कश्मीर समेत द्विपक्षीय मामलों को बिना किसी मध्यस्थता से आपस में सुलझाएंगे। एक्सपर्ट मानते हैं कि इस समझौते में भारत ने ऐसी शर्त नहीं रखी, जिससे पाकिस्तान कमजोर हो। इस समझौते को विवादित मुद्दों से दूर रखा गया। पीएम मोदी ने इसी चूक के जरिये निशाना साधने की कोशिश की।

देश के 8 राज्यों की 58 सीटों पर वोटिंग आज

- मनोज तिवारी, कन्हैया कुमार और मेनका गांधी मैदान में, पूर्व हाईकोर्ट जज भी चुनाव लड़ रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। 2024 लोकसभा चुनाव के छठे फेज में शनिवार को 7 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश की 58 सीटों पर वोटिंग होगी। जम्मू-कश्मीर की अनंतनाग-राजौरी सीट पर तीसरे फेज में चुनाव होना था, लेकिन इसे स्थगित कर दिया गया था। अब यहां छठे फेज में वोटिंग हो रही है। 2019 में इन सीटों पर सबसे ज्यादा भाजपा 40, बसपा 4, बीजेडी 4, सपा 1, जेडीयू 3, टीएमसी 3, एलजेपी 1, आजसू 1 सीट जीती थीं। कांग्रेस और एएपी अपना खाता भी नहीं खोल सकी थीं। इस फेज में 3 केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, कृष्ण पाल सिंह गुर्जर और राव इंद्रजीत सिंह मैदान में हैं। 3 पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती, मनोहर लाल खट्टर और जगदंबिका पाल भी चुनाव लड़ रहे हैं। इनके अलावा मनोज तिवारी, मेनका गांधी, नवीन जिंदल, बांसुरी स्वराज, संबित पात्रा, राज बब्बर, निरहुआ भी अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। चुनाव आयोग के मुताबिक, इलेक्शन के छठे फेज में 889 कैंडीडेट्स चुनाव लड़ रहे हैं। इनमें 797 पुरुष और 92 महिला उम्मीदवार हैं। इस फेज में सबसे अमीर प्रत्याशी भाजपा उम्मीदवार नवीन जिंदल हैं।

मालीवाल केस में बिभव कुमार को राहत नहीं

- फिर मिला झटका, कोर्ट में पेशी के बाद भेजे गए जेल

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट मामले में गिरफ्तार अरविंद केजरीवाल के पीए बिभव कुमार को अभी कोर्ट से राहत मिलती नजर नहीं आ रही है। कोर्ट ने अब बिभव को 4 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। यानी बिभव अब 28 मई तक जेल में रहेंगे। इससे पहले कोर्ट ने उन्हें 5 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा था। हिरासत की अविध आज खत्म होने पर बिभव को कोर्ट में पेश किया गया जहां से उन्हें 4 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। बता दें, स्वाति मालीवाल ने बिभव कुमार पर मारपीट का आरोप लगाया है। उनका आरोप है कि 13 मई को जब वह केजरीवाल से उनके घर मिलने गईं, तब बिभव ने उन्हें बेरहमी से मारा और धमकी भी दी। शिकायत के मुताबिक बिभव ने उन्हें 7–8 थप्पड़ मारे और नीचे घसीटा। इसके बाद उन्हें लात भी मारी। स्वाति मालीवाल की तरफ से एफआईआर दर्ज कराए जाने के बाद पुलिस ने बिभव को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बिभव को कोर्ट में पेश किया जहां से उन्हें 5 दिन की पुलिस कस्टडी में भेज दिया गया। इस दौरान पुलिस क्राइम सीन री–क्रिएट करने के लिए बिभव को दाबारा सीएम आवास भी ले गई।

हरियाणा में भीषण सड़क हादसा, 7 लोगों की मौत

वैष्णो देवी जा रहे श्रद्धालुओं से भरा ट्रैवलर ट्राले से टकराया

अंबाला (एजेंसी)। हरियाणा के अंबाला में गुरुवार देर रात करीब 2 बजे एक भीषण सड़क हादसा हो गया, जिसमें एक परिवार के 7 लोगों की मौत हो गई। वहीं, करीब 19 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। बताया जा रहा है कि ये लोग उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर के रहने वाले हैं। सभी एक ट्रेवलर में सवार होकर जम्मू में माता वैष्णो देवी के दर्शन करने जा रहे थे। इसी दौरान अंबाला-दिल्ली के मोहड़ा में हाईवे पर इनका वाहन एक ट्रॉले से टकरा गया। ट्रेवलर में बच्चे और महिलाएं भी सवार थीं। ट्रेवलर में कुल 26 श्रद्धालु थे। हादसा इतना भयानक था कि ट्रेवलर पूरी तरह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें सवार श्रद्धालुओं में चीख पुकार मच गई। सूचना मिलने के बाद पड़ाव थाना पुलिस मौके पर पहुंची। कुछ श्रद्धालु ट्रैवलर में ही फंस गए थे। इन्हें राहगीरों और पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला। पुलिस ने एंबुलेंस की मदद से घायल श्रद्धालुओं को अंबाला कैंट के सिविल अस्पताल में पहुंचाया।

सुप्रभात

कहाँ हो बुद्ध
क्या हो मठ में
या रहते हो स्तूप में
या करते हो अब भी विहार
बुद्ध कहाँ हो तुम
मेरे अन्तर में फूटते सहस्त्रार में
दमकते सुख के दिन
और गहराती दुख की रात के बीच
उड़ती
आनंद की स्वर्णिम गोधूलि में
खुद के भीतर फूटती
सांझ-वात में
कहाँ हो बुद्ध
विमर्श में नहीं...तुम तो बस भाव
में...अविरल नेह में
बुद्ध...अनुभव करता हूँ तुम्हें
सीमा से परे
धारणा के बिना ...अनुमान से बहुत
आगे ...निर्विकल्प
बुद्ध...तुम्हारा होना ...
आँखो में मनुहार के आँसू
और हाथ में दूध का कटोरा लिए
अरुवेला की सुजाता और
कटी उँगलियों की माला पहने
मगध के अंगुलिमाल
के पास एक साथ होना है
बुद्ध...मेरे भीतर तुम्हारा होना
भीतर के मानसरोवर में
होना है।

– विवेक चतुर्वेदी

आजम खान और परिवार को हाईकोर्ट से मिली बड़ी राहत

- दो जन्म प्रमाणपत्र मामले में मिली जमानत

प्रयागराज (एजेंसी)। सपा नेता आजम खान, उनकी पत्नी तंजीन और बेटे अब्दुल्ला को दो जन्म प्रमाण पत्र के मामले में बड़ी राहत मिल गई है। हाईकोर्ट ने तीनों की सजा पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही तीनों को जमानत भी दे दी है। हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजय कुमार सिंह ने आजम खान, तंजीन और अब्दुल्ला आजम की आपराधिक पुनरीक्षण याचिका पर यह फैसला सुनाया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद 14 मई को फैसला सुरक्षित कर लिया गया था। तीनों फिलहाल अलग अलग जेलों में बंद हैं। हाईकोर्ट से जमानत के बाद भी केवल तंजीन ही बाहर आ सकती हैं। आजम खान को डूंगरपुर मामले में सात साल और छजलैट मामले में भी दो साल की सजा मिली हुई है। इसी तरह अब्दुल्ला दो साल की सजा मिली हुई है।

सड़कों पर न हो पूजन-नमाज : सीएम मोहन यादव

कानून व्यवस्था की समीक्षा, ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी

भोपाल (नप्र)। धार्मिक स्थल पर ही पूजन-नमाज का कार्यक्रम होना चाहिए। सड़कों पर इस तरह के कार्यक्रम नहीं हो। पुलिस की जिम्मेदारी है कि लोगों को असुविधा वाले मामलों में सख्ती बरतें। इस तरह के मामले में ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पुलिस फील्ड में दिखनी चाहिए, और इसके लिए मुख्यालय के अफसरों को भी फील्ड में निकलना होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ये बातें शुक्रवार को भोपाल में पुलिस अधिकारियों की बैठक में कहीं। वे प्रदेश में कानून व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव वीरा राणा, प्रमुख सचिव गृह संजय दुबे, डीजीपी सुधीर सक्सेना समेत अन्य अफसर मौजूद थे।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के पालन में लापरवाही– सीएम यादव ने कहा- कुछ जिलों में लाउड स्पीकर एक से अधिक लगने की जानकारी आई है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का पालन करने में लापरवाही की सूचना है। इसलिए पुलिस अधिकारी इसे सख्ती से पालन कराएं। इसकी जिम्मेदारी पुलिस अधीक्षकों की होगी। पुलिस का खौफ बदमाशों में रहना चाहिए। इसके लिए पुलिस सड़क पर दिखे। प्लान तैयार करके काम करना होगा। निचले अमले के कामों के औचक निरीक्षण की भी आदत अधिकारियों को डालना है क्योंकि इससे जनता की सुरक्षा होती रहेगी।

साइबर क्राइम के मामले बढ़ रहे हैं– मुख्यमंत्री ने कहा- बदमाशों की जमानत निरस्त कराने की कार्यवाही पुलिस करें। महिलाओं पर अत्याचार करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा- साइबर क्राइम के मामले बढ़ रहे हैं, इससे लोगों को राहत दिलाने के लिए पुलिस अमले को आवश्यक प्रशिक्षण देने का काम भी किया जाए। साथ ही ड्रग्स और अन्य मादक पदार्थों का उपयोग रोकने के लिए इसकी सप्लाई और इससे जुड़े कारोबारियों पर कार्यवाही की जाए।

मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिए हैं कि पिछले दस सालों में जहां कर्फ्यू लगाने की स्थिति बनी है वहां पुलिस फोर्स बढ़ाएं। संकरी गलियों में जहां पुलिस के मूवमेंट में दिक्कत होती है वहां रास्तों को चौड़ा करने अतिक्रमण हटाया जाए और मार्ग चौड़े कराए जाएं ताकि पुलिस के मूवमेंट में दिक्कत नहीं हो।

लाउड स्पीकर के लिए करें जन जागरण– मुख्यमंत्री ने कहा कि धार्मिक स्थलों पर ध्वनि विस्तारक यंत्रों के अनियंत्रित उपयोग पर रोक का कड़ाई से पालन किया जाए। इस संबंध में जनजागरण के लिए गतिविधियां संचालित की जाएं, रोक पर कोई समझौता नहीं होगा। खुले में मांस की बिक्री पर भी नजर और डीजे पर भी नियंत्रण हों। जुआं, सट्टा, प्रापर्टी संबंधी अपराध, धोखाधड़ी पर प्रभावी नियंत्रण के लिए हर स्तर पर सजग और त्वरित कार्रवाई की जाए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 43 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 25 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

राबड़ी का बॉडीगार्ड रोहिणी की कर रहा था सुरक्षा

एसएसपी ने किया सस्पेंड,

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के बॉडीगार्ड के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है। राबड़ी देवी की बेटी रोहिणी आचार्य सारण लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रही हैं। इस सीट पर 20 मई को मतदान हुआ था। मतदान के दिन राबड़ी देवी का बॉडीगार्ड जितेंद्र सिंह रोहिणी आचार्य के साथ सारण चला गया। वहीं अब प्रशासन ने बॉडीगार्ड जितेंद्र सिंह के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है। पटना के एसएसपी राजीव मिश्रा ने जितेंद्र सिंह को सस्पेंड कर दिया है। रोहिणी आचार्य पर अपनी

मां राबड़ी देवी के बॉडीगार्ड के गलत इस्तेमाल का आरोप लगा है। बिहार पुलिस की एक स्पेशल टीम गुरुवार को राबड़ी देवी की आवास पहुंची और इस दौरान वहां सुरक्षा में तैनात बॉडीगार्ड के रोस्टर को लेकर भी जानकारी ली। चुनाव के दिन सारण में रोहिणी आचार्य के साथ बॉडीगार्ड जितेंद्र सिंह लगातार मौजूद था। इस मामले वीडियो फुटेज भी आया था, जिसके आधार पर कार्रवाई की गई है। पुलिस बॉडीगार्ड से पूछताछ भी करेगी। 20 मई को मतदान के दिन सारण में हिंसा भी सामने आई थी। सारण के नगर थाना क्षेत्र के बूथ नंबर 318 और 319 पर बवाल हुआ था।

मिजोरम में घुसे मणिपुर से भगाए गए 5 हजार म्यांमारी

- चिन-कुकी लोगों का 7-8 गांवों में अवैध कब्जा

आईजोल (एजेंसी)। मणिपुर से निकाले जा रहे म्यांमार के चिन-कुकी लोग मिजोरम में अवैध रूप से घुस रहे हैं। बीते एक हफ्ते में ऐसे करीब 5 हजार घुसपैठिए जंगल के रास्ते मिजोरम में आ चुके हैं। इन्होंने चम्फाई जिले के खुआगंफाह और वाइखाव्लांग जैसे सीमाई गांवों में अपने ठिकाने बनाए हैं। चम्फाई के उपायुक्त जेम्स ललिन्छाना ने बताया कि ये म्यांमारी 17 मई से घुसपैठ कर रहे हैं। चम्फाई में इनकी संख्या 16 हजार से ज्यादा हो चुकी है। 7 से 8 गांवों में इनके अवैध कब्जे हैं। ज्यादातर घुसपैठियों ने भारत-म्यांमार इंटरनेशनल बॉर्डर के पास खुआंगफा और वैखावत्लांग इलाके में अपने रिश्तेदारों के यहां शरण ली है। उन्होंने आगे कहा कि ये लोग खुद को म्यांमार में चल रहे सैन्य संघर्ष के पीड़ित बताते हैं, लेकिन इनमें ज्यादातर वे हैं, जिन्हें मणिपुर सरकार ने हाल ही में बाहर निकाला है। अधिकारियों का मानना है कि उनके देश (म्यांमार) में उनकी जान को खतरा था। इसलिए ये लोग यहां आए हैं। हम उनकी गतिविधि से अवगत हैं। हमारा मानना है कि वहां स्थिति सामान्य होने पर वे वापस अपने घर चले जाएंगे। बता दें कि मिजोरम से सटा म्यांमार बॉर्डर खुला हुआ है। मिजोरम के छह जिले, चम्फाई, सियाहा, लॉन्गटलाई, हनाहथियाल, सेरछिप और सैतुअल म्यांमार के साथ बॉर्डर शेयर करते हैं। यहां 11 जिलों में बीते 3 साल में 35 हजार से ज्यादा म्यांमारी अवैध रूप से रह रहे हैं। आईजोल स्थित सचिवालय सूत्रों ने बताया कि घुसपैठियों में करीब 1300 बांग्लादेशी भी हैं, जिन्होंने लांग्टलाई जिले में शरण ली है। म्यांमार के घुसपैठियों की हरकतों के चलते बॉर्डर पर असम राइफल्स की अतिरिक्त तैनाती की गई है।

कितना लिया दहेज, दीजिए पूरी लिस्ट, तब बनेगा शादी प्रमाण पत्र

- यूपी में अब मैरिज सर्टिफिकेट के लिए लाया गया है नया नियम
- यूपी सरकार की ओर से दिया गया रजिस्ट्रेशन विभाग को निर्देश

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश सरकार ने मैरिज सर्टिफिकेट को लेकर नियमों में बदलाव कर दिया है। सरकार की ओर से इस संबंध में आदेश जारी किए गए हैं। दहेज के शपथ पत्र को इसके लिए अनिवार्य कर दिया गया है। मैरिज सर्टिफिकेट के नियमों के तहत, दूल्हा-दुल्हन पक्ष के लोगों की ओर से शादी का कार्ड, आधार कार्ड, हाई स्कूल की मार्कशीट के साथ दो गवाहों के दस्तावेज भी लगेंगे। दूल्हा-दुल्हन के पक्ष की ओर से शादी में लिए और दिए गए दहेज के विवरण का शपथ पत्र भी सर्टिफिकेट के साथ लगाया जाएगा। मैरिज सर्टिफिकेट के लिए यूपी सरकार ने रजिस्ट्रेशन विभाग को दिशा-निर्देश जारी किया है। रजिस्ट्रेशन विभाग में मैरिज रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट बनवाने के लिए भारी संख्या में आवेदन आते हैं। नियमों के मुताबिक, वर-वधु पक्ष की ओर से विवाह का कार्ड,

आधार कार्ड, हाई स्कूल की मार्कशीट के साथ दो गवाहों के दस्तावेज अब तक लगाए जाते रहे हैं। सरकार ने अब इनके साथ दहेज के शपथ पत्र को भी अनिवार्य कर दिया गया है। इसके लिए कार्यालय में नोटिस भी लगाया गया है। मैरिज सर्टिफिकेट के लिए दहेज शपथ पत्र में शादी के दौरान दिए जाने वाले गिफ्ट का विवरण होगा। इस संबंध में विभागीय अधिकारी का कहना है कि सरकार की ओर से विवाह प्रमाण पत्र बनवाने के लिए शपथ पत्र अनिवार्य किया गया है। सभी को यह निर्देशित कर दिया गया है कि तमाम डॉक्यूमेंट के साथ दहेज का प्रमाण पत्र भी दिया जाए। मैरिज सर्टिफिकेट किसी भी व्यक्ति के शादीशुदा होने का सबसे बड़ा प्रमाण होता है। इसका उपयोग कर शादी के बाद पति या पत्नी के साथ ज्वाइंट बैंक एकाउंट खुलवाया जा सकता है। इसके अलावा पासपोर्ट के लिए अप्लाई करते समय भी मैरिज सर्टिफिकेट की जरूरत होगी। शादी के बाद बीमा के लिए भी यह जरूरी होता है। ट्रैवल वीजा से लेकर किसी देश में स्थायी निवास के लिए मैरिज सर्टिफिकेट की जरूरत होगी। शादी के बाद सरनेम न बदलने वाली महिलाओं को मैरिज सर्टिफिकेट जरूरी होता है। अगर यह नहीं रहेगा तो सरकारी सुविधाओं का लाभ उन्हें नहीं मिल सकेगा।

कांग्रेस ने ब्रह्मोस मिसाइल के निर्यात में की देरी

पीएम मोदी बोले-इन्होंने रक्षा क्षेत्र को बड़ा आघात पहुंचाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सरकार में ब्रह्मोस मिसाइल डील को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। एक रिपोर्ट

में दावा किया गया है कि यूपीए सरकार ने पॉलिटिकल क्लीयरेंस नहीं होने का हवाला देकर कई बार ब्रह्मोस मिसाइल निर्यात पर रोक लगाई। यूपीए सरकार के समय से फैसला न लेने की वजह से कई बार ब्रह्मोस मिसाइल का निर्यात नहीं हो सका। 2014 में बीजेपी की सरकार बनने से पहले भी कांग्रेस की मनमोहन सरकार ने फिलीपींस के दौरे पर जा रही ब्रह्मोस एयरोस्पेस की टीम को रोक दिया गया, इसकी वजह पॉलिटिकल क्लीयरेंस दिया गया। इस खुलासे को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कांग्रेस पर निशाना साधा है। एक निजी चैनल ने अपनी रिपोर्ट में ब्रहोस मिसाइल को लेकर दावा किया है कि मनमोहन सरकार ने बार बार इसके निर्यात में देरी की। दावा किया गया है कि 2011 में विदेश सचिव ने कहा कि जब तक निर्यात नीति नहीं बनती तब तक ब्रह्मोस निर्यात पर बातचीत न हो। रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि 2010 में इंडोनेशिया की टीम को ब्रह्मोस एयरोस्पेस का दौरा करने से रोका गया।

8 नक्सलियों के एनकाउंटर के बाद माओवादियों का पत्र

जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में गुरुवार को 8 नक्सलियों के एनकाउंटर के बाद माओवादियों ने सरकार से बातचीत करने की बात कही है। नक्सलियों की सेंट्रल कमेटी के सदस्य ने सरकार को पत्र लिखा। इसमें लिखा कि खून-खराबा रोकने हम

बातचीत के लिए तैयार हैं। गुरुवार शाम को रेकावाया गांव के पास मारे गए 8 माओवादियों के शव बरामद किए गए थे। सभी शवों को लेकर जवान दंतेवाड़ा पहुंच रहे हैं। घटनास्थल से भारी मात्रा में हथियार भी मिले हैं। मारे गए नक्सलियों की अभी पहचान नहीं हुई है।

पत्नी और बेटी की कुल्हाड़ी से हत्या, फिर खुद को लगाई फांसी

दमोह (नप्र)। दमोह जिले के हिंडोरिया थाना क्षेत्र में एक युवक ने पहले पत्नी और बेटी की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी। इसके बाद खुद भी फंदे से झूल गया। घटना रोणा पटना गांव में शुक्रवार शाम 7 बजे की है। मनोज पटेल का पत्नी सोमाबाई से किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। जिसके बाद उसने पत्नी और बेटी वेदिका पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही हिंडोरिया थाना प्रभारी अमित गौतम पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे हैं। मामले की जांच की जा रही हैं।

भोजशाला की खोदाई में दो स्थानों से स्तंभों के तीन पाषाण अवशेष मिले

*धार की भोजशाला में सर्वे का 64वां दिन था
*हाई कोर्ट में रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए दस्तावेजीकरण कार्य में जुटी टीम

धार (नप्र)। ऐतिहासिक भोजशाला में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) के सर्वे के 64वें दिन टीम ने उत्तर व दक्षिण भाग में सर्वे किया। इसमें उत्तर की ओर स्तंभों के दो पाषाण अवशेष तथा गर्भगृह से एक अवशेष प्राप्त हुआ है।इस पर भोजशाला के मौजूदा स्तंभों की तरह ही आकृति बनी हुई है। इनके काल की गणना की जाएगी। चार जुलाई को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ में सर्वे रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी है, इसके लिए दस्तावेजी कार्य तेज कर दिया गया है। शुक्रवार को मुस्लिम समाज ने नमाज अदा की। मुस्लिम समाज ने उच्चतम न्यायालय के आदेश के बावजूद मूल स्वरूप में छेड़छाड़ करने का आरोप लगाते हुए काली पट्टी बांधकर विरोध किया है।

बूथ वाइज डेटा अपलोड करने का अब नहीं दे सकते निर्देश

- एससी बोला-5 फेज की वोटिंग हो चुकी, चुनाव आयोग के लिए मैनपावर जुटाना मुश्किल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को चुनाव आयोग की वेबसाइट पर 48 घंटे के अंदर बूथ वाइज वोटिंग डेटा और फॉर्म 17सी डेटा अपलोड करने का निर्देश देने से इनकार कर दिया। टीएमसी नेता महुआ मोइत्रा, कांग्रेस नेता पवन खेड़ा और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने यह याचिका लगाई थी। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की वेकेशन बेंच ने सुनवाई के दौरान कहा कि लोकसभा चुनाव के 5 फेज की वोटिंग हो चुकी है। बेंच ने कहा- अब सिर्फ दो फेज की ही वोटिंग बाकी हैं। ऐसे में डेटा अपलोडिंग के लिए मैनपावर जुटाना चुनाव आयोग के लिए मुश्किल होगा। चुनाव बाद रेगुलर बेंच मामले को देखेगी। लोकसभा चुनाव शुरू होने के बाद वोटिंग के दिन चुनाव आयोग वोटर टर्नआउट जारी करता है। इसके कुछ दिन बाद वह इस फेज के फाइनल डेटा जारी करता है। कांग्रेस, एडीआर और तृणमूल ने दोनों डेटा में अंतर आने के बाद ही सवाल उठाए और सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई। याचिका के मुताबिक, चुनाव आयोग ने 19 अप्रैल को पहले चरण के मतदान के 11 दिन बाद और 26 अप्रैल को दूसरे चरण के मतदान के चार दिन बाद 30 अप्रैल को फाइनल वोटिंग पर्सेंट जारी किया था। इसमें वोटिंग के दिन जारी शुरुआती आंकड़े के मुकाबले वोटिंग पर्सेंट लगभग 5-6 प्रतिशत ज्यादा था।

लाश के टुकड़ों से मांस छील हल्दी में मिलाया, फिर की पैकिंग

- बांग्लादेशी सांसद अनवारुल को हनीट्रैप में फंसाने वाली महिला ने उगले राज

कोलकाता (एजेंसी)। बांग्लादेश के सांसद अनवारुल अजीम अनार हत्याकांड में पुलिस एक के बाद एक चौंकाने वाले खुलासे कर रही है। इस मामले में सामने आया है कि सांसद के बचपन के दोस्त ने उसकी हत्या की साजिश रची थी। इसके लिए उसने अपनी गर्लफ्रेंड का सहारा लिया। गर्लफ्रेंड ने सांसद अनवारुल को हनीट्रैप में फंसाया। उसे कोलकाता बुलाया और उसके बाद उसकी हत्या की गई। गला घोटकर हत्या के बाद शव के टुकड़े किए गए। शरीर के टुकड़े करने के लिए मुंबई से प्रोफेशनल कसाई को बुलाया गया। इस हत्याकांड के लिए पांच करोड़ रुपये खर्च किए गए। हत्या के पीछे का कारण 100 करोड़ रुपये का सोना बताया जा रहा है। पुलिस का दावा है कि हत्या के लिए अनवारुल को हनीट्रैप में फंसाने वाली महिला को बांग्लादेश में गिरफ्तार कर लिया गया है। उसका नाम शिलांती रहमान है और वह बांग्लादेश की ही नागरिक है। हत्या के बाद वह मुख्य हत्यारे अमानुल्लाह अमान के साथ वापस ढाका लौट गई थी। पुलिस ने बताया कि अनवारुल को महिला ने हनीट्रैप में फंसाकर उसे कोलकाता बुलाया।

चार धाम यात्रा को लेकर ऐक्टिव हुई धामी सरकार

- आईटीबीपी और एनडीआरएफ को मिली सुरक्षा की कमान, भीड़ नियंत्रण में मिलेगी मदद

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में चार धाम यात्रा को लेकर विशेष योजना तैयार की जा रही है। चार धाम यात्रा के दौरान भारी संख्या में

श्रद्धालुओं का जुटान हो रहा है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु बिना रजिस्ट्रेशन कराए ही यात्रा पर पहुंच रहे हैं। जुगाड़ तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे चार धामों में जाम जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है। अव्यवस्था का मामला सामने आया। वहीं, तीर्थयात्रियों की सुरक्षा का मसला भी उठा। अब इस प्रकार के मामलों को लेकर केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने मिलकर काम करने का निर्णय लिया है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने भी कहा है कि तीर्थयात्रियों की सुरक्षा हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। इसको लेकर तमाम काम किए जा रहे हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने उत्तराखंड की मुख्य सचिव राधा रतूड़ी के साथ बैठक की। क्राउड मैनेजमेंट के लिए एनडीआरएफ और आईटीबीपी को भी मोर्चे पर लगाए जाने का निर्णय लिया गया है। चार धाम यात्रा की समीक्षा को गुरुवार को हुई वर्चुअल मीटिंग में केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने उत्तराखंड की मुख्य सचिव राधा रतूड़ी को तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को लेकर अहम निर्देश दिया। बैठक में उत्तराखंड की मुख्य सचिव को चारों धाम, यात्रा मार्गों और ठहराव स्थलों पर यात्री संख्या की रिपोर्ट हर रोज गृह मंत्रालय को भेजने को कहा है। साथ ही, भविष्य में चार धाम यात्रा के प्रबंधन की रणनीति बनाने के लिए उन्होंने हाई लेवल कमिटी के गठन के भी निर्देश दिए हैं।

'जानलेवा' हुई गर्मी, राजस्थान में 8 की मौत

मौसम

- 7 राज्यों में 5 दिन तक हीटवेव का रेड अलर्ट जारी
- बाड़मेर सबसे गर्म रहा, भोपाल में पारा 44.4 पहुंचा

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों में तापमान 40 से 46 डिग्री तक पहुंच गया है। मौसम विभाग ने बताया है कि दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात में अगले 5 दिन ऐसे ही हालात रहेंगे।

इन राज्यों में लू का रेड अलर्ट जारी किया गया है। राजस्थान में गुरुवार को लू और गर्मी की वजह से 8 लोगों की मौत हो गई। बाड़मेर में तापमान लगातार दूसरे दिन 48 डिग्री के पार रहा। यहां तापमान 48.8 डिग्री पर पहुंच गया। जैसलमेर से सटे भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर तापमान 53 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

राजस्थान के सरकारी अस्पतालों के सभी डॉक्टरों

और पैरामेडिकल स्टाफ की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। वहीं, यूपी के गौतमबुद्ध नगर जिला प्रशासन ने नोएडा और ग्रेटर नोएडा के सभी स्कूलों में कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिए छुट्टी कर दी है।

केंद्रीय जल आयोग के अनुसार, पिछले सात दिनों में, भारत के 150 प्रमुख जलाशयों में जलस्तर पांच सालों के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। दिल्ली में यमुना नदी में जलस्तर कम हो गया है। कई इलाकों में पानी की सप्लाई पर असर पड़ा है। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में बिजली की मांग गुरुवार को 237 गीगावाट पर पहुंच गई। यह सीजन में सबसे ज्यादा है।

डोंबिवली बॉयलर ब्लास्ट

फैक्ट्री मालिकों पर एफआईआर दर्ज, आरोपी फरार

ठाणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डोंबिवली में केमिकल फैक्ट्री ब्लास्ट में मौत का आंकड़ा बढ़कर 10 हो गया है। पुलिस ने केमिकल फैक्ट्री अमुदन केमिकल प्राइवेट लिमिटेड के मालिकों और स्टॉफ के खिलाफ केस दर्ज किया है। फिलहाल सभी आरोपी फरार हैं। पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए 5 टीमें बनाई हैं। तलाश जारी है। पुलिस के मुताबिक, कंपनी ने रॉ मैटेरियल के स्टोरेज में लापरवाही बरती, जिससे ब्लास्ट हुआ। स्थानीय लोगों ने बताया कि छोटे-छोटे लगातार तीन धमाके हुए थे। ये इतने तेज थे कि लगभग 3 किमी तक सुनाई दिए। आसपास की इमारतों के शीशों में दरारें आ गईं। वहीं, विस्फोट की वजह से आसपास के कई घर क्षतिग्रस्त हो गए। यह फैक्ट्री बंद थी। मरने वालों में ज्यादातर लोग पास के हैं।

लोकसभा निर्वाचन-2024

किसी भी प्रकार के एग्जिट पोल तथा इसके परिणाम का प्रकाशन या प्रचार करना

एक जून की शाम 6:30 बजे तक पूर्णत: प्रतिबंधित है

भोपाल (नप्र)। लोकसभा निर्वाचन-2024 की आदर्श आचार संहिता प्रभावशील है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विगत 28 मार्च को जारी अधिसूचना के अनुसार आदर्श आचार संहिता के दौरान एक जून 2024 की शाम 6:30 बजे तक निर्वाचन के संबंध में किसी भी प्रकार के एग्जिट पोल का आयोजन तथा प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इसके परिणाम का प्रकाशन या प्रचार अथवा किसी भी अन्य तरीके से इसका प्रचार-प्रसार करना पूर्णतः प्रतिबंधित है। उन्होंने बताया कि आयोग की अधिसूचना में स्पष्ट किया गया है कि निर्वाचन के दौरान किसी भी प्रकार के ओपिनियन पोल या किसी अन्य मतदान सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी प्रकार के निर्वाचन संबंधी मामलों के प्रदर्शन पर भी पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा।

भोपाल की बस्तियों में 'सम्मान' का शिविर

युवाओं को दे रहे विभिन्न क्षेत्रों में करियर बनाने की जानकारी

भोपाल (नप्र)। सम्मान संस्था भोपाल ने विभिन्न बस्तियों के युवाओं के लिए करियर परामर्श सत्र का आयोजन किया। इस दौरान संस्था के सदस्य बस्तियों में गए और 10वीं-12वीं उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को बताया कि उन्हें किस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए क्या करना होगा। उसकी तैयारी कैसे करनी होगी और कहां से सहयोग मिलेगा। करियर परामर्शदाता एकता पाण्डेय ने युवाओं को विभिन्न करियर विकल्पों की जानकारी दी और उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने की सलाह दी। संस्था ने विभिन्न बस्तियों में ऐसे ही कार्यक्रम करने की घोषणा भी की।

बजट पूर्व भरे जा रहे वित्त विभाग के रिक्त पद

आईएएस लोकेश जाटव और फ्रेंक नोबल की सचिव व डिप्टी सेक्रेट्री फाइनेंस के पद पर पदस्थापना

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के वित्त बजट की तैयारियों में जुटी मोहन सरकार ने विभागीय बजट बैठकें तेज करने के साथ वित्त विभाग में नए अफसरों की पदस्थापना भी करना शुरू कर दिया है। इसके पीछे शासन की मंशा है कि वित्त विभाग में अफसरों की कमी नहीं रहने से वित्त व्यवस्था संबंधी विभिन्न विभागों से जुड़ी छोटी-छोटी गलतियों को दुरुस्त कर जनता के लिए सुविधायुक्त बजट तैयार कराया जा सकेगा। इसी तारतम्य में दो आईएएस अफसरों की पोस्टिंग मंत्रालय के वित्त महकमे में की गई है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार यह पदस्थापना चुनाव आयोग की सहमति के आधार पर की गई है। इसके लिए आयोग की ओर से 10 मई को दी गई स्वीकृति के बाद जीएडी ने लोकेश कुमार जाटव सचिव खाद्य, नागरिक और उपभोक्ता संरक्षण विभाग को सचिव वित्त विभाग पदस्थ किया गया है। साथ ही उन्हें आयुक्त कोष और लेखा का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। आयुक्त कोष और लेखा का पद इसी माह इस पद पर सेवाएं दे रहे ज्ञानेश्वर पाटिल के केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर जाने के लिए रिलीव होने के बाद से खाली है। इसी आदेश में एक अन्य पदस्थापना नगरीय विकास और आवास विभाग में उप सचिव के पद पर काम कर रहे फ्रेंक नोबल ए. की हुई है। फ्रेंक नोबल को उप सचिव वित्त विभाग के पद पर पदस्थ किया गया है।

शहरों में सिटी फारेस्ट डेवलप कराएगी सरकार

इंदौर के पितृपर्वत का कांसेप्ट प्रदेश के सभी निकायों में लागू करने की तैयारी, बजट प्रस्ताव में भेजा मसौदा

भोपाल (नप्र)। इंदौर के पितृपर्वत की तर्ज पर प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में सिटी फारेस्ट डेवलप किए जाएंगे। चालू वित्त वर्ष के बजट में लाई जाने वाली इस योजना में नगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषद क्षेत्रों में खुली जमीन और पहाड़ी इलाकों में लोगों को प्रोत्साहित कर फारेस्ट एरिया डेवलप कराने का काम किया जाएगा। यह व्यवस्था सभी नगरीय निकायों के लिए शुरू करने का प्रस्ताव नगरीय विकास ने वित्त विभाग को दिया है।

प्रदेश सरकार के जुलाई में आने वाले बजट के लिए विभागवार चर्चाओं का दौर शुरू होने के बाद बजट में नई योजनाओं के प्रस्ताव भी दिए जा रहे हैं। वित्त विभाग द्वारा सभी विभागों के साथ बजट प्रस्तावों पर उप सचिव स्तर की चर्चा के लिए 3 जून तक का समय तय किया गया है और नगरीय विकास विभाग की बैठकें इसको लेकर हो चुकी हैं जिसमें बजट प्रस्ताव के साथ नई योजनाओं की जानकारी भी दी जा रही है। हालांकि नई योजनाओं के प्रस्तावों को अभी अपर मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव स्तर पर मंजूरी मिलने के बाद कैबिनेट की मंजूरी मिलना बाकी है।

ऐसा है इंदौर के पितृपर्वत का इतिहास

इंदौर में गोम्मटगिरि के सामने स्थित पितृपर्वत को इसलिए भी जाना जाता है क्योंकि इंदौर के लोगों ने पितरों की याद में हजारों पौधे रोपे हैं। यहां श्राद्ध पक्ष में हर साल बड़ी संख्या में लोग अपने मित्रों और पितरों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ ही पूजा- पाठ के लिए पहुंचते हैं। लोगों की आस्था को देखते हुए यहां 108 टन वजनी हनुमान मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कराई गई है। भगवान हनुमान की गदा 65 फीट लंबी है, जिसको देखने के लिए हर रविवार को हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

ऐसे होगा वनीकरण का काम

नगरीय विकास विभाग के अफसरों के अनुसार सरकार के कामों में पब्लिक की भागीदारी बनाने को लेकर नगरीय निकायों की वनीकरण योजना तैयार की गई है। इसके पीछे मंशा यह है कि जब लोग किसी योजना से सीधे जुड़ेंगे तो उसके रखरखाव की भी चिंता करेंगे। इंदौर में पितृ पर्वत में पौधरोपण का जो कांसेप्ट सफल हुआ है, उसमें स्थानीय लोगों ने पौधे लगाने के साथ उसकी सुरक्षा का जिम्मा भी संभाला है। इसके साथ ही जो पौधरोपण के बाद सुरक्षा की जिम्मेदारी नहीं निभा पा रहे हैं, उनके द्वारा इसके संरक्षण के लिए आने वाले खर्च का जिम्मा उठाया गया है। इसके चलते पौधरोपण सफल हुआ है। यही व्यवस्था प्रदेश के सभी निकायों में लागू करने की तैयारी है जिस पर कोई अतिरिक्त खर्च नहीं आएगा।

ग्रीन बेल्ट की जमीन पर रहेगा फोकस

नगरीय विकास के अफसरों के अनुसार इसके लिए मास्टर प्लान घोषित निकायों में ग्रीन बेल्ट की जमीन पर फोकस होगा। हर निकाय में इसके लिए जमीन का प्रावधान होता है, वहां की जमीन पर पौधरोपण के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाएगा और पर्यावरण सुरक्षा को लेकर उसके फायदे भी बताए जाएंगे। वहीं जिन निकायों के पास जमीन उपलब्ध नहीं होगी, उसके लिए राजस्व विभाग से जमीन लेकर पौधरोपण के लिए उपयोग में लाने का काम किया जाएगा।

साक्षी मलिक ने काल भैरव के कान में कही मनोकामना

पति के साथ महाकाल के दर्शन किए; फ्यूचर प्लानिंग पर बोलीं- अपना अखाड़ा बढ़ाऊंगी

उज्जैन (नप्र)। ओलिंपियन पहलवान साक्षी मलिक ने शुक्रवार को महाकाल मंदिर में दर्शन किए। वे पति पहलवान सत्यव्रत कादियान के साथ उज्जैन पहुंचीं। काल भैरव मंदिर में उन्होंने भगवान के कान में अपनी मनोकामना कहीं। मीडिया से बात करते हुए बोलीं, आज की महिला किसी से कम नहीं है। वे अब अपने अखाड़े को आगे बढ़ाऊंगी।

महाकाल मंदिर में साक्षी और उनके पति ने नंदी हॉल में बैठकर बाबा की आराधना की। पूजन पुरोहित शैलेंद्र शर्मा ने करवाया।

मीडिया से से बात करते हुए साक्षी ने कहा, शांतिपूर्वक दर्शन हुए हैं। यही कामना की है कि पूरा परिवार अच्छे से रहे, आगे बढ़ता रहे, तरक्की करता रहे। आगे की तैयारी पर कहा, हमारा खुद का अखाड़ा है। अपना अखाड़ा आगे बढ़ाएंगे। जो हमने सीखा है, बच्चों को सिखाएंगे।

पिछले साल मई महीने में नए संसद भवन के सामने महापंचायत करने जा रहे पहलवानों को पुलिस ने हिरासत में लिया था। इस दौरान साक्षी मलिक समेत अन्य पहलवानों के साथ पुलिस की खींचतान हुई थी।

पिछले साल मई महीने में नए संसद भवन के सामने महापंचायत करने जा रहे पहलवानों को पुलिस ने हिरासत में लिया था। इस दौरान साक्षी मलिक समेत अन्य पहलवानों के साथ पुलिस की खींचतान हुई थी।

हरियाणा की साक्षी मलिक टाइम टॉप 100 लिस्ट में

अमेरिका की टाइम मैगजीन ने हाल ही में हरियाणा की ओलिंपियन पहलवान साक्षी मलिक को आइकॉन की लिस्ट में प्रभावशाली हस्ती माना है। मैगजीन ने टॉप 100 हस्तियों के नामों की घोषणा की। मैगजीन में नाम पाने वाली हरियाणा की इकलौती पहलवान साक्षी मलिक हैं। मैगजीन ने इनका नाम शामिल करते हुए कहा कि साक्षी ने कुश्ती में यौन शोषण के खिलाफ बृजभूषण सिंह के खिलाफ एक मुहिम छेड़ी है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए प्रदर्शन में भी साक्षी ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इतना ही नहीं, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हुए अपनी कुश्ती से भी संन्यास ले लिया है।

भोपाल में 6 साल के मासूम पर कुत्तों का अटैक

नीलबड़ में स्ट्रीट डॉग ने घेरा, पेट-कमर पर काटा; राहगीरों ने बचाया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के नीलबड़ इलाके में स्ट्रीट डॉग ने 6 साल के मासूम पर अटैक कर दिया। कुत्तों ने बच्चे को पेट और कमर में काट दिया। कुत्तों के हमले से घबराए बच्चों को पास से गुजर रहे लोगों ने बचाया। बच्चे का जेपी हॉस्पिटल में इलाज कराया गया।

कुत्तों के काटने से अनय शुक्ला (6) निवासी नीलबड़ जख्मी हुआ है। गुरुवार शाम को वह घर के बाहर खेल रहा था। तभी दो कुत्तों ने उस पर हमला कर दिया। अनय कुछ समझ पाता, इससे पहले ही कुत्तों ने उसे कमर और पेट पर काट दिया। इसी दौरान पास से गुजर रहे लोगों ने कुत्तों को भगाकर बच्चे को बचाया।

पहली कक्षा में पढ़ रहा अनय- कक्षा पहली में पढ़ने वाले अनय के पिता रामजी शुक्ला प्राइवेट जॉब करते हैं। रामजी ने बताया, कुत्तों के हमले से अनय डर गया था। उसे पास से गुजर रहे लोगों ने बचाया। वरना बड़ी घटना हो जाती। इसके बाद अनय को जेपी हॉस्पिटल में लेकर आए। जहां उसका इलाज किया गया। डॉक्टर ने 25 मई, 30 मई और 20 जून को एंटी रैबीज के अगले 3 टीके लगाने को कहा है।

पूरे शहर के कुत्ते नीलबड़ में छोड़ देते हैं- अनय के पिता रामजी ने बताया कि घर के आसपास कुत्तों के झुंड हैं, जो नन्हें बच्चों को काटने के लिए पीछे दौड़ते हैं। नगर निगम के कर्मचारी पूरे शहर के आवारा कुत्ते पकड़कर नीलबड़ में छोड़ देते हैं। अभी भी घर के आसपास कुत्तों के झुंड है। इससे डर बना रहता है। बेटा भी घर से बाहर नहीं निकल रहा है।

फ्रांस में 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित होंगे संतोष चौबे

लक्समबर्ग पैलेस, फ्रांस सीनेट, पेरिस में आयोजित होगा भव्य अलंकरण समारोह

भोपाल (नप्र)। साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और कौशल विकास के क्षेत्र में पाँच दशकों से सक्रिय संतोष चौबे को प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय 'भारत गौरव सम्मान- 2024' से अलंकृत किया जाएगा। संतोष चौबे को यह सम्मान लक्जमबर्ग पैलेस, फ्रांस सीनेट, पेरिस में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में 5 जून 2024 को प्रदान किया जाएगा।

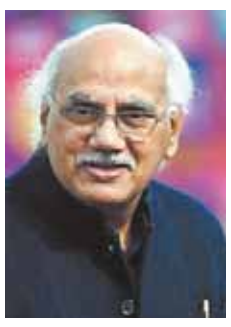

भारतीय इंजीनियरिंग सेवा तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित श्री संतोष चौबे, वर्तमान में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय के चांसलर हैं तथा आईसेक्ट नेटवर्क, राज्य संसाधन केन्द्र, वनमाली सृजन पीठ एवं टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला केन्द्र के अध्यक्ष हैं।

उल्लेखनीय है कि श्री संतोष चौबे हिन्दी साहित्य तथा भाषा को बढ़ावा देने के लिए लेखन के साथ-साथ विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सतत सक्रिय हैं। इसके साथ ही विज्ञान, तकनीकी और कौशल विकास के क्षेत्र में भी आप अनवरत महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन्होंने पिछले चालीस वर्षों में पूरे भारत में चालीस हजार से अधिक प्रशिक्षण एवं सेवा केन्द्रों का नेटवर्क स्थापित किया जो हजारों लोगों को रोज़गार देने के अलावा डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाओं में भागीदारी कर रहा है। तकनीक के साथ साथ वे कवि, कथाकार, उपन्यासकार संपादक और अनुवादक भी हैं जो अपने अभिनव रचनात्मक प्रकल्पों और नवाचारों के लिए वैश्विक पहचान रखते हैं। उनके छह कथा संग्रह- 'हल्के रंग की कमीज', 'रेस्त्रां में दोपहर', 'नौ बिंदुओं का खेल', 'बीच प्रेम में गांधी', 'मगर शेक्सपियर को याद रखना' तथा 'प्रतिनिधि कहानियाँ', चार उपन्यास- 'राग केदार', 'क्या पता कॉमरेड मोहन', 'जलतरंग', और 'सपनों की दुनिया में ब्लैक होल', चार कविता संग्रह- 'कहीं और सच होंगे सपने', 'कोना धरती का', 'इस अ-कवि समय में' तथा 'घर-बाहर' प्रकाशित और चर्चित हुए हैं। टेरी इगल्टन, फ्रेडरिक जेमसन, वॉल्टर बेंजामिन, ओडिसस इलाइटिस एवं ई.एफ. शूमाकर के उनके अनुवाद लेखक और प्रतिबद्धता, मॉस्को डायरी तथा भ्रमित आदमी के लिए एक किताब के नाम से प्रकाशित हैं जो व्यापक रूप से पढ़े व सराहे गये हैं। उन्होंने कथाकार वनमाली जी पर केन्द्रित दो खंडों में वनमाली समग्र का तथा कथा एवं उपन्यास पर केन्द्रित वैचारिक गद्य की तीन पुस्तकों आख्यान का आंतरिक संकट, उपन्यास की नयी परम्परा एवं कहानी: स्वप्न और यथार्थ का संपादन भी किया है। इसी के साथ उनकी आलोचना पुस्तकें कला की संगत एवं अपने समय में भी प्रकाशित हुई हैं। हाल ही में निबंधों की पुस्तक परंपरा और आधुनिकता आई है और काफी सराही गई है। वर्तमान में वे नाटक तथा कलाओं की पुरस्कृत और प्रतिष्ठित अंतर्विधायी पत्रिका रंग संवाद के प्रधान संपादक हैं। उनके द्वारा संपादित मध्यप्रदेश के दो सौ से अधिक कथाकारों पर केन्द्रित कथाकोश कथा मध्यप्रदेश को राष्ट्रव्यापी ख्याति मिली है। इसी क्रम में विश्व रंग के अवसर पर उन्होंने देश भर के छह सौ से अधिक कथाकारों के कथा संचयन कथादेश को अठारह खंडों में सम्पादित किया है। वनमाली कथा सम्मान 2022 के अवसर पर प्रकाशित, भोपाल के एक सौ पचहत्तर से अधिक कलाकारों पर केन्द्रित कथा भोपाल तथा हिन्दी में विश्व की 200 से अधिक विज्ञान कथाओं को विज्ञान कथा कोश के वे प्रधान सम्पादक हैं।

संघ का सबसे बड़ा कार्य है समाज में उदाहरण खड़े करना : स्वप्निल कुलकर्णी

मध्यक्षेत्र के 20 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण वर्ग 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-1' का उद्घाटन

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ के मध्य क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के लिए 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-1' का आयोजन भोपाल के शारदा विहार परिसर में प्रारंभ हो गया है। वर्ग के उद्घाटन में क्षेत्र प्रचारक श्री स्वप्निल कुलकर्णी ने कहा कि संघ व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है। समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे निष्ठावान लोग खड़े होने चाहिए, जिनको देखकर अन्य लोग सीख लें। इसलिए हम कह सकते हैं कि संघ का सबसे बड़ा कार्य- 'समाज में उदाहरण खड़े करना है'। इस अवसर पर मंच पर वर्ग के सर्वाधिकारी श्री सोमकांत उमालकर भी उपस्थित थे। कार्यकर्ता विकास वर्ग में छत्तीसगढ़, महाकौशल, मालवा और मध्यभारत के कुल 382 स्वयंसेवक प्रशिक्षण प्राप्त करने आए हैं। 20 दिवसीय वर्ग में स्वयंसेवक सुबह 4:30 बजे से रात्रि 10:30 बजे तक अनुशासित दिनचर्या का पालन करते हुए संघ कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए क्षेत्र प्रचारक श्री कुलकर्णी ने कहा कि देशभक्ति, त्याग और समर्पण की भावना के साथ हम राष्ट्रीय कार्य में जुड़ते हैं। इस कार्य को करने की कुशलता प्राप्त करने के लिए संघ की ओर से वर्गों का आयोजन करने की परंपरा है। सही अर्थों में कुशलता का नाम ही वर्ग है। संघ के वर्ग में कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक ढंग से होता है। हम यहाँ के पाठ्यक्रम के

साथ ही एक-दूसरे से भी सीखते हैं। प्रशिक्षण प्राप्त करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह प्रशिक्षण स्वयं के व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ अपने कार्यक्षेत्र में संघ कार्य विस्तार के लिए उपयोगी है। हम यहाँ जो कुशलता प्राप्त करेंगे, उसका उपयोग संघ कार्य के विस्तार में करना है। उन्होंने कहा कि पुरुषार्थी कार्यकर्ताओं ने भावनाओं के साथ कुशलता से कार्य किया, तब जाकर आज संघ हमें विराट स्वरूप में दिखायी देता है।

उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण वर्ग देश के लिए अपना समय, धन और मन देकर कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण है। प्रशिक्षण वर्ग से कार्यकर्ताओं में नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। वर्ग में कार्यकर्ता हिन्दू समाज को मिलनेवाली चुनौतियों का सामना करने और सज्जनशक्ति को राष्ट्रीय कार्य में साथ लेने का कौशल सीखते हैं। उन्होंने कहा कि आज देश में ऐसी ताकतें सक्रिय हैं, जो हिन्दू समाज को विखंडित करने के प्रयास में लगी हुई हैं। वे हमें जाति, पंथ, स्त्री-पुरुष इत्यादि प्रकार के भेदों में बाँटने के लिए वैचारिक भ्रम उत्पन्न करते हैं। उन्होंने कहा कि विविधता हमारी कमजोरी नहीं अपितु हमारी विशेषता रही है। परंतु औपनिवेशिक ताकतों ने हमारे बीच विविधता को आधार बनाकर द्वेष और भेद उत्पन्न करने के षड्यंत्र रचे हैं। हमें इन षड्यंत्रों के प्रति जागरूक होना है और अपने समाज को भी जागरूक करना है। श्री कुलकर्णी ने कहा कि भारत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सबसे बड़ा उदाहरण है। हमारा समाज अनेक प्रकार की विविधताओं के होते हुए भी एक साथ रहता है।

'कार्यकर्ता विकास वर्ग' के नाम से यह पहला वर्ग है

श्री कुलकर्णी ने कहा कि डॉक्टर साहब (संघ के संस्थापक सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार) के समय से कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए संघ शिक्षा वर्ग आयोजित करने की परंपरा शुरू हुई। अब तक क्षेत्र का यह वर्ग 'संघ शिक्षा वर्ग-द्वितीय वर्ष' के नाम से आयोजित होता था लेकिन अब यह 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-1' के नाम से आयोजित होगा। उन्होंने 1940 में नागपुर में आयोजित ऐतिहासिक संघ शिक्षा वर्ग का भी उल्लेख किया, जिसमें पहली बार संपूर्ण भारत से स्वयंसेवक प्रशिक्षण हेतु शामिल हुए थे। संघ में जिला स्तर पर आयोजित सात दिन के प्रशिक्षण वर्ग को 'प्राथमिक वर्ग', प्रांत स्तर पर आयोजित 15 दिन के प्रशिक्षण वर्ग को 'संघ शिक्षा वर्ग', क्षेत्र स्तर पर आयोजित 20 दिन के वर्ग को 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-1' और नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय स्तर के वर्ग को 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-2' कहते हैं।

4 प्रांतों के 382 स्वयंसेवक ले रहे प्रशिक्षण

संघ की रचना में मध्य क्षेत्र में चार प्रांत हैं- छत्तीसगढ़, महाकौशल, मालवा और मध्यभारत। इन चारों प्रांतों से कार्यकर्ता विकास वर्ग-1 में कुल 382 शिक्षार्थी आए हैं, जिनमें छत्तीसगढ़ से 78, महाकौशल से 85, मालवा से 118 और मध्यभारत से 97 चयनित स्वयंसेवक शामिल हैं। वर्ग के संचालन के लिए 19 अधिकारियों की संचालन टोली है, जिसमें सर्वाधिकारी के अलावा वर्ग पालक श्री अशोक पोरवाल और वर्ग कार्यवाह श्री बलवंत राव इत्यादि शामिल हैं। इसके साथ ही शिक्षार्थियों के प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक प्रांत से शिक्षक भी आए हैं।

संपादकीय

छात्रों को वापस लाए सरकार

विदेशों में फंसे भारतीयों, यहां तक पड़ोसी देशों के नागरिकों को भी निकालने में तत्परता दिखाने वाली भारत सरकार मध्य एशियाई देश किर्गीस्तान में फंसे भारतीय छात्रों को निकालने के मामले में इतनी सुस्त क्यों हैं, समझना मुश्किल है। किर्गीस्तान की राजधानी बिश्केक में पढ़ाई के लिए गए सैंकड़ों छात्र-छात्राएं स्थानीय लोगों की दंबगई के चलते दहशत में हैं। उनके परिजनो में भी बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता है। ये बच्चे लगातार मैसेज भेज रहे हैं कि उन्हें बचाओ। लेकिन विदेश मंत्री एस. जयशंकर का कहना है कि सब ठीक है। जल्द हालात सामान्य होंगे। वो कह रहे हैं कि सभी भारतीय छात्र सुरक्षित हैं। जबकि जमीनी हकीकत दूसरी है। उधर मौके का नाजायज फायदा उठाते हुए विमान कंपनियों ने भी किराए अनाम शनाप बढ़ा दिए हैं, जो छात्रों की हैसियत से बाहर है। ये महंगी फ्लाइटें भी आसानी से नहीं मिल रही हैं। पाकिस्तान सहित दूसरे कई देशों ने वहां फंसे अपने छात्रों को निकालना शुरू कर दिया है। इस बीच राजस्थान फाउंडेशन ने विद्यार्थियों की मदद के लिए हेल्प लाइन नंबर जारी किया है। किर्गिस्तान में करीब 17 हजार भारतीय विद्यार्थी बताए जाते हैं, जो सस्ती मेडिकल पढ़ाई के चलते वहां हैं। इस बीच भारतीय समुदाय ने इंडियन एम्बेसी को फोन करके मदद की गुहार लगाई है। केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी ने विदेश मंत्री जयशंकर से छात्रों को वापस लाने के लिए विशेष उड़ानें संचालित करने का अनुरोध किया है। हालांकि वहां दहशत के कारण का भारतीय छात्रों से कोई लेना देना नहीं है। विगत 13 मई को मिस्र के छात्रों और स्थानीय लोगों के बीच हिंसा हुई थी। छात्रों के मुताबिक एक स्थानीय शख्स को मिस्र के छात्रों के हॉस्टल में चोरी करते हुए पकड़ा गया था। इसके बाद छात्रों के ग्रुप ने उसकी पिटाई कर दी। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। नतीजतन स्थानीय लोगों में इसको लेकर गुस्सा बढ़ गया। इसके बाद कुछ स्थानीय लोगों ने स्टूडेंट्स को पीटा। किर्गिस्तान के युवा रूस जाकर काम कर रहे हैं। यहां के आर्थिक हालात ठीक न होने के कारण स्थिति बिगड़ रही है। स्थानीय लोगों के निशाने पर बाहरी और प्रवासी छात्र हैं। स्थानीय लोग अरब, मिस्र, भारतीय और पाकिस्तानी छात्रों को निशाना बना रहे हैं बाहरी छात्रों को सोशल मीडिया के जरिए धमकियां दी जा रही हैं। मकान मालिक छात्रों से घर खाली करने को कह रहे हैं। कुछ लड़कियों के साथ रेप भी हुआ है। किर्गीस्तान की 90 फीसदी आबादी मुस्लिम है। पूरा देश प्राकृतिक सुंदरता से भरा पड़ा है।

जब हमने दरवाजा नहीं खोला तो उन्होंने दरवाजा तोड़ने की भी कोशिश की। जहां मैं रहती हूं, उस कमरे में डबल डोर सुरक्षा व्यवस्था है। उन्होंने एक दरवाजा तोड़ दिया, लेकिन वे दूसरा दरवाजा नहीं तोड़ सके, इस वजह से हम बच गए। हमें अब भी डर है कि ऐसी स्थिति में हमारे साथ कुछ भयानक हो सकता है। हैरानी की बात यह है कि किर्गीस्तान सरकार और स्थानीय प्रशासन इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है, जबकि हर देश में विदेशी छात्रों की सुरक्षा का जिम्मा स्थानीय प्रशासन का होता है। लेकिन वहां जो रहा है, उससे लगता है कि स्थानीय प्रशासन पर दबंगों पर कोई नियंत्रण नहीं है। भारत सरकार को इस पूरे मामले को गंभीरता से लेना चाहिए और जैसे कि अन्य देशों में फंसे भारतीयों को भारत सरकार अपने खर्चे पर लेकर आई थी, वैसी ही व्यवस्था इस मामले में भी की जानी चाहिए। केवल दूतावास से जानकारी लेने भर से कुछ नहीं होगा। विदेशी मंत्री को स्वयं प्रभावित छात्रों से सीधी बात करनी चाहिए।

रेवंत के लिये 'अण्णा' हैं मोदी

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ए. रेवंत रेड्डी चतुर - सुजान राजनेता हैं। वह प्रत्युत्पन्नमति और वाक-पटु हैं। दक्षिण भारत के राज्यों में वह युवतम मुख्यमंत्री है। उनकी साफगोई जनता पसंद करती है। उनके इंटरव्यू दिलचस्प होते हैं। वह दस साल पहले अस्तित्व में आये तेलंगाना राज्य के हितों की बात करते हैं और अपने विरोधियों पर निशाना साधते है कि वह किसी को भी तेलांगों को लूटने या छलने नहीं देंगे। वह प्रधानमंत्री मोदी को निशाने पर लेते हैं कि वह तेलंगाना की कीमत पर गुजरात के हित साध रहे हैं। वह दक्षिण भारत की उपेक्षा की भी बात करते हैं। जब वह आरोपों की दुनाली खोलते हैं तो उनका लहजा तनिक चूहलभय होता है। उनकी बातों में तंज होता है और वह चुटकी होने से बाज नहीं आते।

जुम्मा-जुम्मा आठ रोज पहले 'द हिन्दु' में आर. रविकांत रेड्डी को उनका दिया साक्षात्कार छपा है। यह साक्षात्कार एक बड़े फलक को समेटता है। रेवंत बेलौस कहते हैं कि आरएसएस बीजेपी के जरिये अपना एजेंडा लागू करने के फेर में है। धारा 370, सीएए, तीन तलाक, अयोध्या में राम मंदिर के बाद अब बारी संविधान और आरक्षण-समाप्ति की है। आरएसएस के एजेंडे और सन 2021 में जनगणना नहीं कराने में सीधा रिश्ता है। गौर करें कि ब्रिटिशकाल से प्रत्येक दस वर्ष में मर्दुमशुमारी होती आई है। मोदी जानते हैं कि लोग जनगणना और जातिगणना चाहते हैं। वह क्यों बहुमत के बजाय अब की बार 400 पार की बात कर रहे हैं। ऐसा इसलिये क्योंकि वह तीन चौथाई बहुमत के बिना संविधान में संशोधन नहीं कर सकते। रेवंत रेड्डी के इस कथन के आधार पर बिलाशक कहा जा सकता है कि वह आरएसएस- बीजेपी की मंशा या हिडेन एजेंडे को बूझ रहे हैं।

यह देखना दिलचस्प है कि रेवंत वैचारिकी और व्यावहारिकता के छोरों को एक साथ कैसे साधते हैं। पहले तो उनके आक्रामक अंदाज को देखें। उनका मत है कि मोदी की सियासी नुमाइंदगी में दक्षिण भारत को कतई प्रमुखता नहीं देना चाहते। दूसरे दक्षिण अपने वित्तीय हिस्से से भी वंचित है। तेलुगु भारत में हिन्दी के बाद सर्वाधिक व्यवहृत भाषा है, किंतु 42 सांसदों के दो तेलुगुभाषी राज्यों तेलंगाना और आंध्रप्रदेश से केन्द्र सरकार में सिर्फ एक काबीना मंत्री है, जबकि 26 सांसदों के गुजरात से सात काबीना मंत्री हैं। वहीं उत्तर प्रदेश से 12 मंत्री है। सभी प्रमुख ओहदे - प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षा, वित्त, शहरी विकास, ग्रामीण विकास, वाणिज्य उत्तर भारतीयों के पास है। ये विमर्श के मुद्दे हैं। अगले परिसीमन को लेकर भी आशंकाएं है।

रेवंत की नजरों में अडानी और अंबानी ही डबल-इंजन सरकार है। जनता को लगता है कि जिस जुड़वां-इंजन की बात की जाती है, है उससे सीधा तात्पर्य अडानी और अंबानी से है। वह आगे कहते हैं, आय एम इन वार जोन। आई हैव टु एक्ट एकॉर्डिंगली। वह आगे कहते हैं कि बतौर सीएम वह पीएम से अच्छे रिश्ते रखेंगे। भारत राज्यों का संघ है और प्रधानमंत्री समस्त मुख्यमंत्रियों के बड़े भाई हैं। उन्हें 'अण्णा' की भूमिका निभानी है। मिजाज से थोड़ा नरम, थोड़ा गरम रेवंत को यकीन है कि चुनाव 24 में कांग्रेस तेलंगाना में कुल 17 में से 14 सीट जीतेंगी। दक्षिण भारत के एक अन्य राज्य तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन कम आशावादी नहीं है।

तमिलनाडु में कांग्रेस उनकी सहयोगी है। पुदुच्चेरि की इकलौती सीट पर उसकी प्रतिष्ठा दांव पर है। स्टालिन लगातार कह रहे हैं कि द्रमुकनीत गठबंधन तमिलनाडू और पुदुच्चेरि की सभी 40 सीटों पर विजयी होगा। दिल्ली और चेन्नै के रिश्ते बेहद तल्ख है। बीजेपी की दिक्कत यह है कि उसके तुरूप-मुद्दे, यहाँ काम नहीं आते। वित्तीय मामलों में केन्द्र द्वारा मुश्कें कसने के बाद भी तमिलनाडु की विकास दर धीमी नहीं हुई है। बाढ़ राहत को लेकर गत दिनों केंद्र और राज्य में खटास बढ़ी है। द्रमुक - सरकार ने इस मद में 37907 करोड़ रूपयों की मांग की थी, लेकिन उसे हीले-हवाले के बाद मिले 276 करोड़ रुपये। जबकि वह 2477 करोड़ रुपए खर्च कर चुकी थी। राज्य सरकार को यह ऊंट के मुंह में जीरे सी यह मदद सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद मिली। केन्द्र के रवैये पर स्टालिन ने ट्वीट किया कि केंद्र की घोषणा ने पुष्टि कर दी है कि तमिलनाडु को न तो न्याय मिलेगा और न ही वित्त। जनता इस विश्वासघात को देख रही है।

तमिलनाडु अकेला राज्य नहीं है, जिसने केन्द्र के सौतेले बर्ताव से आहत होकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। केरल और कर्नाटक भी ऐसा करने को बाध्य हुये। कर्नाटक 48 लाख हेक्टर में फसल चौपट हुयी। राज्य ने राष्ट्रीय आपदा कोष से सहायता मांगी। 35000 करोड़ की क्षति की रपट सितंबर, 2023 में केन्द्र को भेजी गयी। रवायत के मुताबिक 18172 करोड़ रुपये की रकम रिलीज होने का अनुमान था। किन्तु फाइल के ठंडे बस्ते में पड़े रहने के बाद अंततः अप्रैल के अंत में सर्वोच्च न्यायालय की हिदायत पर राज्य को मिले मात्र 3454 करोड़ रुपए। इस बीच वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण यह कहने से नहीं चूकीं कि राज्य सरकार को केंद्र से मदद दुर्भिक्ष-राहत के लिए नहीं, अपितु गारंटियाँ लागू करने के लिए चाहिये। इस पर सीएम सिद्धरामैया ने तुर्की-ब- तुर्की कहा कि हमने गारंटी स्कीमों के लिए कभी धेला भी नहीं मांगा।

यह तो हुई तमिलनाडु और केरल की बात। केन्द्र से शिकायत केरल को भी बहुत हैं। दरअसल केरल का सियासी मिजाज बीजेपी को फुटी आंखों नहीं सुहाता। उसकी बड़ी दिक्कत यह है कि दो पाटों में बंटी केरल की राजनीति में वह सेंध नही लगा पा रही है। नीना पिल्ले से लेकर श्रीधरन तक पर दांव लगाना निष्फल रहा। लगातार ऐसा कुछ हुआ कि राज्यपाल आरिफ मोहमद खान की भूमिका संदेह और सवालों के घेरे में आ गई। इस पर विजयन-सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। कवायद काम कर गयी। राज्यपाल महोदय ने अंततः सदन में पूर्व में पारित पांच बिलों पर अप्रैल के आखिरी हफ्ते में दस्तखत किये। इनमें से कुछ बिल राजभवन में दो से भी अधिक वर्षों से लंबित थे। गौरतलब है कि महामहिम राज्यपाल केंद्र सरकार के एजेंट के तौर पर काम करने की तोहमतें अर्से से झेलते आ रहे हैं।

केरल में बीजेपी की ईसाइयों में पैठने की रणनीति छुपी नहीं रह सकी है। वह मुस्लिमों और ईसाइयों के बीच अलगाव के फेर में है। दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर आकर ईसाई धर्मगुरुओं से मिले। दूरदर्शन पर केरल फाइल्स का प्रसारण हुआ। मजहबी मुद्दों को हवा दी गयी। केरल में हिन्दू- मुस्लिम राजनीति का ताजा शिकार हुये फिल्म अभिनेता मामूटी। मामूटी समकालीन मलयाली सिनेमा के लीजेंड्री व्यक्तित्व है। गत दिनों एक फिल्म निर्माता ने सूर्रा छोड़ दिया कि मामूटी को फिल्म पूझू में काम नहीं करना था। सन 2022 में आई इस फिल्म में मामूटी ने ऊंची जाति के ऐसे पुलिस अफसर की भूमिका निभाई थी, जो निचली जाति के युवक से अपनी बहन के प्रेम-विवाह का विरोध करता है। पूझू जाति-व्यवस्था पर करारा प्रहार है। मामूटी को विवाद में घसीटने का एकमात्र कारण यह है कि मामूटी मूलतः मुसलमान है। उनका मूल नाम है मोहम्मद कुट्टी। जाहिर है कि विवाद के पीछे सांप्रदायिक दुराग्रह और घृणा का हाथ है। बहरहाल, इस गलीज हरकत का समूचे केरल में चौतरफा विरोध हुआ। सत्ता और विपक्ष मामूटी की पीठ पीछे खड़े नजर आये और मलयाली सिने उद्योग में सांप्रदायिकता की विष बेल बोने के घृणित प्रयास का विरोध हुआ। राजस्व मंत्री के. राजन ने कहा कि मामूटी को उसके मजहब के कारण संघ-परिवार ने निशाना बनाया है। कांग्रेस के महा- सचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि कला सियासत और मजहब के ऊपर की चीज है। मामूटी पर संघ-परिवार का हमला निंदनीय है।

विभिन्न घटनाओं के फलस्वरूप जो अदृश्य धूम वातावरण में प्रसारित हो रहा है, वह यकीनन चुनाव को प्रभावित करेगा। इस नयी सदी में भी जाति, धर्म, संप्रदाय और पंथ चुनावी हार जीत में प्रभा की भूमिका निभाते हैं और करिश्मा भी काम करता है। आंध्र में कम्माओं और रेडियों, तेलंगाना में मुस्लिमों, कर्नाटक में लिंगायत और वोक्कालिंगा और केरल में ईसाई- मुस्लिमों की अवहेलना नहीं की जा सकती। कहीं कापू है, तो कहीं वन्नियार। कहने को खम्मम तेलंगाना में है लेकिन वहां पार्टी लाइन से परे हर कोई एनटीआर (दिवंगत एनटी रामाराव) के गुणगान में लिप्त है। देखना दिलचस्प होगा कि कर्नाटक में शैव मठ की बोजेपी में दिग्गज नेता प्रह्लाद जोशी से नाराजगी क्या गुल खिलाती है? नजरे हैदराबाद में ओवैसी बनाम माधवी लता पर गड़ी है। दोनों के व्यक्तित्व में कट्टरता के चरख रेशे हैं। काँग्रेस को दक्षिण के सिंह द्वार कर्नाटक से बड़ी उम्मीद है। डिप्टी सीएम शिवकुमार की मानें तो वहां कांग्रेस की तालिका 18-20 तक पहुंच सकती है। आंध्र में लड़ाई वाईएसआर की विरासत की भी है। जगन और शर्मिला वहाँ अलग- अलग राहों के राही हैं। जिज्ञासा बाबू (चंद्र बाबू नायडू) की सत्ता में वापसी को लेकर भी है। तमिलनाडू में डीएमके गठबंधन और केरल में कांग्रेसनीत गठबंधन ने बढ़त बनाई है। दोनों प्रदेशों में आरएसएस-बीजेपी का एजेंडा निशाने पर है। एमके स्तालिन दूरदर्शन के लोगो को यकबयक भगवा रंग में रंगने को बीजेपी के व्यापक भगवाकरण अभियान का हिस्सा मानते हैं। नतीजे जनादेश ही नहीं, इन मुद्दा पर रायशुमारी भी होंगे?

पर्यावरण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

अंगारे तो बरसेंगे, कहां छोड़ी माटी, पानी, पेड़?

आ समान से अंगारे बरस रहे हैं। बरसे भी क्यों नहीं जब चारों तरफ कांक्रीट के जंगल उगे जा रहे हैं तो यह पृथ्वी तपेगी ही। हम सब एक भट्ठी के उपर जैसे बैठे हों और सुबह होने के साथ ही यह भट्ठी गरम होने लगती है। ठंडी बयार का इंतजार ही करते रह जाते हैं कि अब हवा चलेंगी तो घूमने निकला जाए, पर कहां निकलेंगे सुबह के साथ ही सूर्य का पारा चढ़ जाता है और इतना चढ़ जाता है कि आप छाये में आने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जिसे देखो वही गर्मी गर्मी करने लगता है।

अब गरम हवाएं इतना सघन अहसास कराती हैं कि आदमी हांफते हुए ही दिखता है। अब आदमी की सहन शक्ति ही कम नहीं हुई है बल्कि मौसम ही इतना ज्यादा गर्म हो गया है कि उसकी सहन शक्ति जवाब दे गई है। वह बौखलाया हुआ दिखता है। इस समय यदि कोई बदहवास, बौखलाया हुआ दिखे तो समझ लीजिए कि वह इन गर्म हवाओं का शिकार हो गया है उसे समझाने और संभालने की जरूरत है न कि उससे आप और उलझ जाएं। यह समय गर्म हालात का सताया हुआ है। जब ये हवाएं सही नहीं जाती तो इन्हें आग बरसाती हवाएं ही कहेंगे। इतना ही नहीं ये गर्म हवाएं असहनीय हो जाएं तो अंगारे ही कहेंगे। ये आग आसमान से उतर रही है और हवाओं संग पूरे वातावरण में यहां तक कि मन मस्तिष्क पर छा गई है। जो जहां है जिस हालात में है बस एक ही नाम ले रहा है कि उफ़ ये गर्मी। गर्मी तो मार ही डालेगी। हीट वेव गर्म हवाओं की लहर चल रही है। मनुष्य से लेकर पशु पक्षी सभी बेहाल हैं।

हालात इतने बिगड़ गये हैं कि आप कहीं भी निकल जाएं सड़कों पर सन्नाटा पसरा है। दुकानदार दुकान में बैठा है काउंटर खाली पड़े हैं। सब बस गर्मी गर्मी कह रहे हैं और इस गर्मी से बचाव का जतन अपने अपने स्तर पर कर रहे है। कोई लस्सी पी रहा है तो कोई ठंडाई पीने की बात कर रहा है और कोई कोई बर्फ के गोले को मुंह में रख रहा है। ये सब थोड़ी देर के लिए राहत दिलाते हैं फिर वही बात गर्म हवाओं की कहानी और पहले क्या होता था अब क्या हो रहा है। पहले भी मौसम बदलते थे पर ये हालात नहीं थे। अब तो सुविधाएं भी बहुत बढ़ गई हैं पर मनुष्य की सहन शक्ति कमजोर पड़ती जा रही है। अब वह बहुत जल्दी घबड़ा जाता है। तुरंत बिलबिलाने लगता है। कोई भी बाहर नहीं निकल रहा है। यदि काम न हो तो आराम से घर में बने रहे। निकलने की जरूरत भी नहीं है पर जो निकल रहे हैं वे किसी न किसी मजबूरी में निकल रहे हैं। यह समय विशेष सावधानी बरतने का है। गर्म हवाओं से कैसे बचाव करें और अपने कार्य में कैसे सामंजस्य बिठायें कि कार्य भी हो जाए और गर्मी के प्रकोप से बचें रहे। इस समय कुछ ध्यान देने लायक बातें इस प्रकार हैं -

1. अपने आवश्यक कार्य सुबह सुबह ही कर लें। सुबह के समय ठंडक रहती है और ठंडक में आप कार्य आसानी से कर लेते हैं। दोपहर तक कार्य समाप्त कर आराम की मुद्रा में आ जाएं। घर या ठंडी जगह देखकर आराम करें। किसी भी स्थिति में दोपहर में निकलने से बचें।

2. दोपहर बारह बजे से शाम छह बजे तक बाहर जाने से बचें। बाजार दुनियादारी के काम शाम के बाद ही करें। यह समय किसी भी तरह छाया, पंखे, कूलर के बीच निकाले। कुछ भी न हो तो पेड़ की छाया में ही यह समय निकालें।

3. अनावश्यक भागदौड़ से बचें। जहां तक संभव हो किसी छाया वाली जगह देखकर रुक जाएं। अपने को जतन करना, अपने को सहेजना ही मनुष्य के रूप में स्वाभाविक कर्म है। तापाघात से बचाकर रखें।

4. अपने साथ हर स्थिति में पानी रखें। कुछ खाने की सामग्री भी रखें। संभव हो तो सत्तू, भूजा, मोटे अनाज बाजरा रागी के बिस्कुट रखें और समय समय पर पानी और खाद्य पदार्थ लेते रहे। पानी पीते हुए खाते हुए इस कठिन समय को काटा जा सकता है।

5. अपने को धूप पानी के बीच समायोजित करते हुए चलें। जितना ज्यादा अपने को समायोजित कर चलेंगे उतना ही अपना बचाव करेंगे। घर से बाहर जाने की बिल्कुल न सोचें। अभी कहीं भी जाने लायक नहीं है। सड़कें गर्मी के मारे पिघल रही हैं और आप भी पिघलने के लिए जा रहे हैं तो इसमें कोई समझदारी नहीं है।

6. अपने आसपास की उन जगहों का ध्यान रखें जहां इस प्रचंड गर्मी में दोपहर के समय अपना बचाव किया जा सके। इसके लिए पेड़ पौधे और जलश्रोत वाली जगहों की भी जानकारी रखें। जहां सहज शांति और रक्षा मिल सकें।

7. मनुष्य के रूप में तो हम सब अपने लिए आवश्यक सुविधाएं जुटा लेते हैं पर इतना ही काफी नहीं है। हमें यह भी देखना होगा कि ये सुविधाएं केवल हमारे लिए ही नहीं हैं बल्कि हमारे अलावा अन्य जीव के लिए भी ये सुविधाएं होनी चाहिए। अन्य जीवों को बचाने की जिम्मेदारी भी हमारी ही है। हम सबको आगे आना ही होगा जिससे ये जीव जंतु बच सकें।

8. जहां कहीं भी खाली जगह हो, जहां हरियाली की संभावना हो उस संभावना को बनाये रखने में मददगार बने। पेड़, पौधे, घास-फूंस और मिट्टी की दुनिया को जैसे भी हो बचाने की कोशिश करते चलें। जब तक माटी के प्रति संवेदनात्मक लगाव नहीं होगा तब तक हम प्रकृति को कैसे जतन करेंगे। यह भी सच है कि बिना प्रकृति का संरक्षण किए जीवनदायनी स्थितियां नहीं बनने वाली है।

9. हम सबकी यह कोशिश होनी चाहिए कि अपने आसपास परिंडे बांधे, उसमें पानी भरे, पक्षियों के लिए दाने पानी की व्यवस्था करें। इस हेतु कोई और अन्य ग्रह से नहीं आयेगा। इनके लिए तो हमें ही आना होगा अपने आसपास की दुनिया को सहेजने के लिए अपने स्तर पर प्रयास करते रहे तो सब मिलकर इस दुनिया को बचाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। इस तरह सुरक्षित और स्वस्थ देश बनाने में हम सबका योगदान होगा।

आप कोई भी जतन करें यह जरूरी है कि इस हीट वेव से अपने को बचाना है। यह तभी संभव हो सकता है जब एक दूसरे के प्रति सहयोग का भाव हो। हमारे भीतर इतनी करुणा हो कि अपने अलावा अन्य जीव के बारे में सोचने के साथ साथ कुछ कर सकें। मौसम की यह जो मार है इसके पीछे तो मूल रूप से अंधाधुंध विकास की ऊंची ऊंची दुनिया है। चारों तरफ का जो खुलापन था वह खत्म हो गया है। अब वह माटी भी नहीं बची है जो ठंडक की तासीर लाती थी। पेड़ खत्म होते जा रहे हैं और उसकी जगह पर मकान दर मकान बनाते जा रहे हैं कहां से आयेगी ठंडी हवाएं हमने कहीं खाली जमीन नहीं छोड़ी। इस गर्मी से बचाव तभी होगा जब हम सब अपनी जरूरतों को कम करें अपनी आदतों में बदलाव लाएं और अति भौतिकता से मुक्त होकर समाज के बारे में, देश के बारे में सोचें।

परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, इसे स्वीकारना होगा

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

व र्तमान परिवेश में महज लकीर के फकीर रहकर प्रगति पथ पर अग्रसर नहीं रहा जा सकता। आज भी अनेक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणाएं ऐसी है, जिसमें परिवर्तन समय की मांग है। वैसे भी देश-काल और परिस्थिति के मान से जो कल सही था, आज गलत हो सकता है और जो कल गलत था, वह आज सही हो सकता है। हालांकि जीवन के शाश्वत मूल्यों में किसी प्रकार का परिवर्तन हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत की जड़ो से परे कर सकता है। लेकिन निरंतर परिवर्तित दौर में व्यावहारिक दृष्टिकोण को आत्मसात करना भी अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। वैसे भी बीते जमाने के चलन को तार्किक आधार पर ही स्वीकारा जाना चाहिए।

जहां तक राजनीति का सवाल है, आज संविधान में परिवर्तन करने के मुद्दे को हवा में उछाला जा रहा है। राजनीति का एक धड़ा संविधान में परिवर्तन करने की जरूरत पर बल दे रहा है तो दूसरा धड़ा संविधान को ही खतरे में निरूपित कर रहा है। हालांकि चुनावी दौर है, इसलिए अपना पक्ष मजबूत करने और दर्शाने के निमित्त परस्पर प्रतिस्पर्धी राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं पर कपोलकल्पित आरोप भी चस्पा कर दिए जाते हैं। ऐसे आरोप-प्रत्यारोप का कालखंड चलते चुनाव तक ही रहा करता है। वैसे भी अपने देश-प्रदेश में संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जितना उपयोग राजनेता किया करते हैं, उतना उपयोग आम आदमी नहीं करता। खैर।

यदि दो तिहाई बहुमत प्राप्त कर लेने पर सत्तारूढ़ दल भविष्य में कभी संविधान में परिवर्तन करना भी चाहे तो इसे संविधान की मूल भावना के खिलाफ कैसे कहा जा सकता है? लोकतंत्र में वैसे भी जनमत के बहुमत के आधार पर ही सरकार का गठन होता है। अब भला ऐसे में जन भावना के सर्वथा विपरीत जाकर कोई भी सरकार जनता के हितों पर कुठाराघात कैसे कर सकती है? रहा सवाल संविधान में संशोधन का, तो हमारे संविधान में ऐसी व्यवस्था है कि आवश्यक होने पर संविधान संशोधन के लिए लोकसभा और राज्यसभा में दो तिहाई बहुमत का होना जरूरी है। बीते दौर में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को पलटते हुए संविधान में परिवर्तन करने का वाकया घटित हो चुका है।

आज भी सदियों पुराने कानून अमल में लाए जा रहे हैं। जिनका वर्तमान दौर में कोई औचित्य ही नजर नहीं आता। लेकिन हम हैं कि स्वतंत्र देश की धरा पर पराधीन मानसिकता के तहत उन कानूनों का बोझा ढोए जा रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति उपरांत तत्कालीन राष्ट्रनायकों ने अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने की दिशा में संविधान की मूल भावना का मनचाहा अर्थ लगाया। इसके चलते वर्ग विशेष के राजनीतिक हितों को इस कदर संरक्षित किया कि राष्ट्र विरोधी हरकतों की बाढ़-सी आ गई। खैर, अब वह दौर तो गुजर गया, लेकिन सीखने को सबक जरूर सिंखा गया। ऐसे में आज यदि बीते समय की भूल को सुधारने का प्रयास किया जाता है - और यदि यह संविधान के प्रावधान के तहत ही होता है - तो ऐसे में भला गलत क्या?

वैसे भी बहुत ही तीव्रता के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवधारणाओं में भी आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है। जातिगत बंधन टूट रहे हैं, स्त्री शिक्षा में क्रांतिकारी सुधार आया है। पुरुष प्रधान समाज की अवधारणा टूट रही है। शिक्षा के मायने ही बदल गए हैं और आम नागरिकों की जीवन शैली पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गई है। नए दौर में नए विचार जन्म ले रहे हैं। ऐसी स्थिति में किसी लकीर से बंधकर तो नहीं रहा जा सकता। हां, इतना जरूर है कि हमें पूर्वजों द्वारा स्थापित उच्च स्तरीय सांस्कृतिक विरासत के संस्कारों को पूर्ण रूप से आत्मसात करते हुए ही बदलते जमाने की बदलती हवा का आनंद लेना होगा। ऐसा करने पर ही हम सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत को वर्तमान दौर में भी सोने की चिड़िया के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दे सकेंगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक साहित्यकार हैं।

खानदानी गरीब घुइयाँराम

का हो घुइयाँ ..... क्या हाल हैं ? ''

: राम राम बाबू ... गरीब का भी कोई हाल होता है बाबू !

'' अरे जिन्दा हो तो कुछ हाल भी हुए ना ..... कि नहीं हुए ? ''

: हां ..... आप कै रए तो कौन मने कर सकत है ... हाल हुए तो ।

'' वही तो पूछ रहे हैं ... क्या हाल हैं ? ''

: वोई हाल हैं जो बाप-दादा के रहे। .... हाल के लाने पूंछो तो खानदानी हैं।

'' ऐसा कैसे रे घुइयाँ ! बाप-दादा चवन्नी-अठन्नी कमाते थे, उनसे तो ज्यादा नहीं कमाते हो तुम ? ''

: उ बखत मा बड़ी औकात रही चवन्नी-अठन्नी की। अब ससुरा सौ का नोट भी लजाऊ हो गया है ।

'' अरे सुना नहीं तुमने कि अनाज, इलाज सब फिरि-फ़ोकट मिल रहा है । सबके अच्छे दिन आ गए हैं ! ऐसे में तुम्हारा फर्ज है घुइयाँ कि खुश हो जाओ। ''

: अरे का बाबू .... कहने से कौनो खुसी आती है का! अच्छा दिन जिनका आया उनका आया ... सबका थोड़ी आया है ।

'' ऐसा क्या ! ... फिर ? ''

: फिर का बाबू .... आप ही बताओ।

'' वोट तो डालोगे ना ? चुनाव लगे पड़े हैं सामने । ''

: गरीब तो सबही डरैंगे, किसी के लिए मनै थोड़ी है।

'' सबकी छोड़ो, तुम डालोगे या नहीं ? ''

: अभही का कहें बाबू .... मन हो जाई तो डार देंगे।

'' अरे इसमें मन की क्या बात है .... मन नहीं हुआ तो नहीं डालोगे ?''

: कछु कैं नहीं सकत बाबू , डार भी दैं ना भी डारैं।

'' पिछली दफे डाला था ?''

: हओ ... डारै रहे।

'' मन हो गया था डालने का ?''

: हओ ...

'' कैसे हुआ था मन ?''

: वा लोगन ने गांधी बाबा के दरसन करबाए .... तो मन हो गया। बाबा का मान तो रखबै को पड़े।

'' इस बार दरसन नहीं हुए बाबा के ?''

: अभी तलक तो नहीं हुए .... हो जैहें, ... अभी टैम है।

'' कौन से गांधी के दरसन की इच्छा है ?''

: इच्छा की बात नै है, रिबाज की बात है । पांच सौ बाले दो के करवा दओ।

'' हजार !! घुइयाँराम गांधी बाबा तो बीस-पचास में भी लगे पड़े हैं।''

: पड़े होएंगे .... जा में बाबा कोई काम के नहीं हैं।

'' काम के कैसे नहीं हैं ! सरकार रुपइया किल्लो गेंहूं देती है, दो रुपइया में चावल किल्लो भर ।''

: कभहीं देखे हो सरकारी गेहूं-चावल ! गइया-भैंसी को डारो तो खाए नहीं ।

'' तो हजार से कम पर मानोगे नहीं। ''

: मन के खातिर पैसा मांग रहे हैं बाबू । गरीब आदमी के पास कब मौका आता है !

'' अरे !! जरा सा तो काम है यार । बटन दबाना है बस । ''

: आप लोग बटन दबाने का कितना तो लेते हो बाबू ।

'' हम कहां लेते हैं ! तुम तो बदनाम कर रहे हो घुइयाँ । ''

: नौकरी, भत्ता, पेंसन, उप्पर-नीचे की कमाई, ठेका-कमीसन .... । का हम जानते नहीं बाबू !

'' ये बटन दबाने का मिलता है क्या ! काम करते तब मिलता है।''

: कितना काम करते हो बाबू हमें पता है। मुंह ना खुलवाओ।

'' तुम तो लड़ने पर आमादा हो गए घुइयाँ ।''

: बाबू हम हक्क की बात करत हैं तो संसार को लगता है कि लड़ते हैं।

'' देखो वोट के लिए पैसा लेना-देना गलत बात है। ''

: कोई बाद में लेत है कोई पहले मांगत है। .... एक बार बटन दबवा लेने के बाद हमार कोई इज्जत है !! ... रुपइया किलो का सड़ा गेहूं हो जाते हैं हम । नाम भरे के ।

'' नाराज हो गए घुइयाँराम । चलो छोड़ो ... और बताओ ... क्या हाल हैं ?''

: गरीब का हाल कोई सुन सकता है बाबू ! ..... जिगर चहिए । ऐसन कोई सरकार होई कभी ?

'छोडो घुइयाँराम ... हमसे क्यों झूठ बुलवा रहे हो । तुम ठहरे खानदानी गरीब । तुम ही लोकतंत्र की आत्मा हो । अजर अमर हो ।'

: का बोले बाबू?

'तुम नहीं समझोगे घुइयाँराम ।'

विडंबना

सम्मान से पेट नहीं भरता साहब, जिंदगी बिता दो बस!

विवेक रंजन सिंह

लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थी हैं।

मध्य प्रदेश के उमरिया जिले का एक गांव, जहां बैगा जनजाति बड़ी संख्या में है। कटनी से उमरिया की ओर जाता हुआ राष्ट्रीय राजमार्ग और उसके किनारे लोढ़ा गांव। इसी गांव में बिल्कुल सड़क से सटा हुआ है पद्मश्री जोधइया बाई का कच्चा सा घर। घर की दीवारों पर बैगा चित्रकारी की गई है। एक बोर्ड लगा है जिसपर उनका नाम पद्मश्री उपाधि के साथ लिखा गया है। मुझे नहीं पता आते जाते कितने लोग यहां ठहरते होंगे। मैं ठहरा और कच्चे कमरे में घुस गया। उनके नाती मिले। बेटे की कोरोना काल में मृत्यु हो गई थी। उनकी बेटी और नाती मिलकर उनकी देखभाल करते हैं। कच्चे घर पर कुछ निशान लगाए गए हैं। शायद सड़क चौड़ीकरण में उनको तोड़ दिया जाएगा। कंकरीट बनती दुनिया में मिट्टी का आखिर क्या ही मोल होगा। घर से ही सटा एक महुआ का पेड़। महुआ का समय जा चुका है सो हरी भरी पत्तियों से लदे पेड़ में महुए के फल के घौंद लगे हैं। सदियों से आदिवासियों के जीवन यापन का बड़ा स्रोत महुआ ही रहा है।

लकड़ी बीनकर बाजार में बेचने वाली जोधइया बाई को क्या पता था कि उनकी बैगा चित्रकारी एक दिन विश्व पटल पर जानी जाएगी। बैगा खुद को आदि मानव सभ्यता की पहली पीढ़ी मानते हैं। बाघ उनके देवता है और वो बाघों के साथ सदियों से मित्रवत रहते आए हैं। हालात बदले हैं। अब बाघ हिंसक हो चले हैं। आवारा पशुओं की बढ़ती तादात से अब वो कोर एरिया से बफर जोन में भी घूमने लगे हैं। बाहरी पर्यटकों के आने से उनके रहन सहन पर प्रभाव पड़ा है। वो शांति चाहते हैं। जोधइया बाई की चित्रकारी में बाघ शांत हैं। वो लोगों के साथ मित्रवत दिखाई दे रहे हैं। मगर उनका जीवन बिलकुल भी ठीक नहीं चल रहा। उनका जीवन उनके उकेरे चित्रों की तरह बहुरंगी नही है। पद्मश्री मिलने के बाद भी उनकी जीवनस्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ।

खाट पर बेसुध पड़ीं हुई जोधईया बाई। पक्षाघात के चलते उनके शरीर के बाएं हिस्से ने काम करना बंद कर दिया है। उनका वो हाथ भी काम नहीं करता जिससे वो चित्रकारी करती रही हैं। थोड़ा बहुत पक्का घर बन गया है। दो तीन कमरों में रंगाई पुताई भी हो गई है। नाती पोते और उनकी बेटी मिलकर उनका ख्याल रखती हैं। नाती काठ से बनी कलाकृतियों को बेचकर घर का गुजारा करता है। अब उनकी उम्र नब्बे की हो चली है। उनकी चित्रकारी और कला को पहचान दिलाने वाले आशीष स्वामी भी अब नहीं रहें। ठीक से बोल नहीं पाती मगर आखें और चेहरे के भाव बहुत कुछ कहते हैं। अब तो इस हालत में हैं कि चित्रकारी करके भी अपने अंदर की व्यथा को नहीं कह सकती। मैं जैसे ही पहुंचा,दूसरे हाथ को उठाए वो सलामी दे रही थीं। मेरी आंखें नम हो गईं। दौड़कर हाथ थाम लिया और पैर पकड़कर बैठ गया। चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई हैं। इलाज चल रहा है। थोड़ा बहुत जोर लगाकर स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मदद करवाई है।

अब पद्मश्री सम्मान में कोई धनराशि या पेंशन जैसी योजना तो है नहीं। पेंशन और सुविधा देश के नेताओं के लिए ही है। हजारों साल की परंपरा को बचाने वाले कलाकारों को सिर्फ सम्मान मिलता है। सम्मान भी किस बात का। सम्मान देकर कलाकार कम,सरकार ज्यादा सम्मानित होती है। चारों ओर सरकार की जय जय होने लगती है।

आखिर बिस्तर पर पड़े-पड़े नब्बे वर्षीय जोधइया बाई

क्या सोच रही होंगी? एक समय था जब उमरिया के जंगलों में वो लकड़ी बीनकर,नाचते गाते अपनी जिंदगी बिता रही थी और अचानक जिंदगी में ऐसा मोड़ आया जो उन्हें राष्ट्रपति भवन तक ले गया। उन्हें जरूर लगा होगा कि अब बाकी की जिंदगी शायद अच्छे से गुजर जाए। सम्मान पाने के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री से घर मांगा। शायद आपने लिए नहीं बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए। उनके लिए घर बहुत मायने रखता है। आज भी छत की आस में न जाने कितने लोग आंखों में उम्मीद लिए बैठे हैं।

बगल में ही सड़क दूसरी पार तस्वीरखाना है। बैगाओं की कलाओं के कई नमूने वहां रखे गए हैं। लोहे का गेट है। गेट जितना ही रचनात्मक है उसपर लगा बोर्ड उतना ही भयानक। लिखा है 'कुत्तों से सावधान'। ऐसा लगता है कि आशीष स्वामी के जाने के बाद इस संग्रहालय की देखरेख 'कुत्ते' करते हैं।

तस्वीरखाना और जोधइया बाई के घर का फासला बमुश्किल सौ मीटर का है। मगर उनके जीवन और संग्रहालय के बीच एक बड़ी खाई है। ठीक वैसे ही जैसे जंगलों में सैर सपाटे के लिए आते लोगों के लिए पर्यटन हर व्यवस्था करता है। हवाला देता है कि पर्यटन बढ़ेगा और स्थानीय लोगों का जीवन सुधरेगा। मगर उन्हें मिलता है सिर्फ बचा खुचा 'जूठन', जो बाजार चलाने और मुनाफा कमाने वालों से बच जाता है। जब भी किसी अधिकारी, नेता को आना होता है तो जोधइया बाई को बाकायदा अच्छी साड़ी पहनाकर तैयार करके वहीं संग्रहालय ले जाया जाता है। फोटोबाजी होती है। नाम होता है। सम्मान होता है। पता चला किसी अधिकारी ने अपने प्रयास से एक बड़ा काम किया। घर के बाहर पद्मश्री का बोर्ड लगवाया। ऐसा पुनीत कार्य करने वाले अफसर को मेरा प्रणाम। मगर मैं तैयार हूं फिर से प्रणाम करने के लिए, उन अधिकारियों को, जो जोधइया बाई के घर का विवाद सुलझाकर उन्हें सम्मानजनक जिंदगी देने का वादा करें। आखिर अब कितनी ही जिंदगी बची है उनकी।

सरकारी आवास,भत्ता,वेतन,खाने का भत्ता,यात्रा का भत्ता बिल भरके मजा करने वाले नेता अधिकारी के खर्चे से कम ही खर्च आएगा एक पद्मश्री के साल भर का खर्च। जीवन भर कला संस्कृति को समर्पित करने वाले कुछ ही लोग तो हैं जिनको ये पद्म सम्मान मिलते हैं। इनको क्या कम से कम पेंशन या घर के किसी सदस्य को एकाध नौकरी नहीं दे सकती सरकार? दे सकती है, जरूर दे सकती है। राजनीतिक पार्टियों के छोटे से छोटे नेता देखते देखते लाखों की संपत्ति बना लेते हैं,उनका देश के सामाजिक विकास में क्या योगदान है, सबको पता है। बताने की जरूरत नहीं है। मगर जोधइया बाई जैसे न जाने कितने कलाकार और सम्मान प्राप्त हस्तियां हैं जो मूलभूत जरूरतों के लिए भी मोहताज हैं। उनकी ये स्थिति आने से पहले क्यों नेता और स्थानीय अधिकारी उन्हें सम्मानजनक जीवन देने का प्रयास नहीं करते। देश का असली गौरव तो यही लोग हैं। थोड़े में रहकर,थोड़ा सा खाकर गुजारा करने वाले इन शालीन,सरल लोगों में बहुत चाह नहीं होती,फिर भी सरकार को उचित कदम उठाना चाहिए।

एक तो पद्म सम्मान भी कलाकारों को उनके उम्र के ऐसे पड़ाव पर मिलते हैं जब वो शारीरिक रूप से कमजोर होने लगते हैं। ऐसे में जो थोड़ा बहुत जीवन उनके पास होता है, उस जीवन में कम से कम वो अच्छा जीवन बिता लें,सरकार इतना तो कर ही सकती है।

अब सरकार को चाहिए कि पद्म सम्मान पाने वाले किसी भी शख्सियत को (यदि उनकी उम्र साठ वर्ष से ज्यादा है) तो उन्हें आर्थिक सहायता के रूप में उनकी पेंशन का इंतजाम करे या फिर परिवार के एक सदस्य को नौकरी दे और स्थानीय शासन प्रशासन को निर्देश दे कि उनके सुखद जीवन व्यतीत करने में उनकी हर संभव मदद करे। लाखों करोड़ों रुपए कला संस्कृति के नाम पर खर्च हो रहे हैं ऐसे में कला को बचाकर रखने वाले कलाकारों के जीवन यापन के बारे में सोचना भी सरकार का काम है। सिर्फ़ जोधइया बाई ही नहीं,बल्कि उनकी तरह तमाम कलाकार सम्मान पाने के बाद गुमनामी की जिंदगी बिताने को विवश हो जाते हैं।

मुद्दा

जल-संकट चुनाव जीतने का नहीं, समाधान का माध्यम बने

ललित गर्ग

लेखक पत्रकार हैं।

देश के कई भागों में भीषण गर्मी पड़ रही है, जैसे-जैसे गर्मी प्रचंड होती जा रही है, जल संकट की खबरें भी डराने लगी है। राजस्थान, दिल्ली, कर्नाटक आदि प्रांतों में पानी के लिये त्राहि-त्राहि मची है। मध्यप्रदेश के छतरपुर ज़िले महर-खुवा गांव में जल-संकट की तस्वीरें भयावह एवं डराने वाली है। इस गांव में लगभग 100 आदिवासी परिवार रहते हैं, जिनके पास अब इतना भी पानी नहीं बचा है कि ये दिन में दो वक्त का खाना बना सकें और अपनी प्यास बुझा सकें। ऐसे हजारों गांव हैं, जहां पानी के अभाव में जीवन संकट में हैं। भारत अपने इतिहास के सबसे गंभीर जल संकट का सामना कर रहा है। लोकसभा चुनाव अन्तिम चरण की ओर अग्रसर है, आज हमारे उम्मीदवार मुफ्त बिजली और पानी देने का वादा करके चुनाव तो जीत जाते हैं लेकिन भारत में जिस तरह पानी का संकट गंभीर हो रहा है, उससे उनकी कथनी और करनी की असमानता ही बार-बार उजागर होती है। जल-संकट चरम पराकाष्ठा पर है, एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जब पैसा देकर भी पानी खरीदना मुश्किल हो जाएगा। जल-संकट चुनाव जीतने एवं राजनीतिक बयानबाजी का हिस्सा तो है, लेकिन समाधान का नहीं। जल संकट ने राजनीतिक रंग तो ले लिया है, विभिन्न राजनीतिक दल एक-दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं और पिस रहा आम आदमी। पैसे वालों के लिए पानी इतनी बड़ी समस्या नहीं है लेकिन जिन लोगों के पास पैसों की किल्लत है, वे पानी की किल्लत से भी जूझ रहे हैं क्योंकि टैंकर का पानी महंगा पड़ रहा है।

वास्तव में लगातार बढ़ती गर्मी के कारण जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है। इसके गंभीर परिणामों के चलते राजस्थान, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में पानी की कमी ने गंभीर रूप धारण कर लिया है। देश का आईटी हब बेंगलुरु गंभीर जल संकट से दो-चार है। जिसका असर न केवल कृषि गतिविधियों पर पड़ रहा है बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी भी बुरी तरह प्रभावित हो रही है। केंद्रीय जल आयोग के नवीनतम आंकड़े भारत में बढ़ते जल संकट की गंभीरता को ही दर्शाते हैं। आंकड़े देश भर के जलाशयों के स्तर में आई चिंताजनक गिरावट की तस्वीर उकेरते हैं। देश में प्रमुख जलाशयों में उपलब्ध पानी में उनकी भंडारण क्षमता के अनुपात में तीस प्रतिशत की गिरावट आई है। जो हाल के वर्षों की तुलना में बड़ी गिरावट है। जो सूखे जैसी स्थिति की ओर इशारा करती है। महर-खुवा गांव की ही तरह अलवर जिले के कई गांव में लोग किसी एक मौसम में नहीं, बल्कि 12 महीने भीषण जल संकट का सामना कर रहें है। इन गांवो में पानी का स्त्रोत है ही नहीं। इन इलाकों में पानी की इतनी कमी है कि लोग उसे अपने घरों में टैंकर में छिपाकर और ताला लगाकर सुरक्षित रखने लगे हैं।

भारत के गांवों में रहनेवाले करीब 20 करोड़ परिवारों के घरों में नल नहीं है। इन परिवारों की औरतें पैदल चलकर, घंटों लाइन में लगकर पानी इकट्ठा करती हैं। इसी चुनौती से निपटने के लिए मोदी सरकार ने साल 2019 में हर घर में नल से पानी पहुंचाने के लिए जल जीवन मिशन की घोषणा की। सरकार का दावा है कि अब तक 10 करोड़ घरों में नल लग गए हैं। लेकिन अभी हजारों गांवों में जल-संकट एक बड़ी समस्या बनी हुई है। एक नागरिक के रूप में हम आत्ममंथन करें कि बढ़ते जल-संकट के समाधान की दिशा में हमने क्या कदम उठाये। क्या पानी की फिजूल खर्ची को कम करने का कोई संकल्प लिया? गर्मी के आने पर हम हाय-हाय तो करने लगते हैं, लेकिन कभी हमने विचार किया कि हम इस स्थिति को दूर करने के लिये क्या योगदान देते हैं? क्या हम पौधा-रोपण की ईमानदार कोशिश करते हैं? हम जल के दुरुपयोग को रोकने का प्रयास करते हैं? क्या वर्षा जल सहेजने का प्रयास करते हैं ताकि तापमान कम करने व भूगर्भीय जल के संरक्षण में मदद मिले?

सच कहें तो हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के अनुरूप जैसी जीवन शैली विकसित की थी, वह हमें कुदरत के चरम से बचाती थी। राजस्थान में जल-संकट की संभावनाओं को देखते हुए आम नागरिक खुद के स्तर पर व्यापक प्रयत्न करता है। रेगिस्तान से जुड़े अनेक गांवों एवं शहरों में बने या बनने वाले मकानों में कुआ जरूर होता है, जहां बरसात के पानी को एकत्र किया जाता है, जो संकट के समय काम आता है। इसलिये गाँव के स्तर पर लोगों के द्वारा बरसात के पानी को इकट्ठा करने की शुरुआत करनी चाहिये। उचित रख-रखाव के साथ छोटे या बड़े तालाबों को बनाने के द्वारा बरसात के पानी को बचाया जा सकता है। हम महसूस करें कि बढ़ती जनसंख्या का संसाधनों में बढ़ता दबाव भी तापमान की वृद्धि एवं जल-संकट का कारण है। बड़ी विकास परियोजनाओं व खनन के लिये जिस तरह जंगलों को उजाड़ा गया, उसका खमियाजा हमें और आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। विलासिता के साधनों, वातानुकूलन के मोह, वाटर-पार्कों एवं होटलों में पानी के अपव्यय को रोकने के लिये जन-चेतना जागृत करने की अपेक्षा है।

हमारे पुरखों ने मौसम अनुकूल खानपान, परंपरागत पेय-पदार्थों के सेवन तथा मौसम अनुकूल जीवन शैली के साथ-साथ जल-संरक्षण का ऐसा ज्ञान दिया, जो हमें मौसम के चरम में सुरक्षित रख सकता है। एक व्यक्ति के रूप में हम बहुत कुछ ऐसा कर सकते हैं जिससे जल-संकट से खुद व समाज को सुरक्षित कर सकते हैं। सरकार व समाज मिलकर जल-संकट का मुकाबला कर सकते हैं। भारत में जल-संकट की समस्या से निपटने के लिये प्राचीन समय से जो प्रयत्न किये गये है, वे दुनिया के लिये मार्गदर्शक हैं। देश के सात राज्यों के 8220 ग्राम पंचायतों में भूजल प्रबंधनों के लिए अटल भूजल योजना चल रही है। स्थानीय समुदायों के नेतृत्व में चलने वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। साथ ही, नल से जल, नदियों की सफाई, अतिक्रमण हटाने जैसे प्रयास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उचित ही रेखांकित किया कि सभी राज्यों को मिलकर काम करना होगा तथा जल संरक्षण एवं उपयोग किये गये पानी को फिर से इस्तेमाल में लाने के उपाय करने होंगे। हमारे यहां जल बचाने के मुख्य साधन है नदी, ताल एवं कूप। इन्हें अपनाओं, रक्षा करो, अभय दो, इन्हें मरुस्थल के हवाले न करो। अन्तिम समय यही तुम्हारे जीवन और जीवनी को बचायेंगे।

धरती के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है। परंतु, पीने योग्य जल मात्र तीन प्रतिशत है। इसमें से भी मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं। 2030 तक देश में पानी की मांग उपलब्ध जल वितरण की दोगुनी हो जाएगी। जिसका मतलब है कि करोड़ों लोगों के लिए पानी का गंभीर संकट पैदा हो जाएगा। स्वतंत्र संस्थाओं द्वारा जुटाए डाटा में दर्शाया गया है कि करीब 70 प्रतिशत प्रदूषित पानी के साथ भारत जल गुणवत्ता सूचकांक में 122 देशों में 120वें पायदान पर है। नीति आयोग ने कहा है, 'अभी 60 करोड़ भारतीय गंभीर से गंभीरतम जल संकट का सामना कर रहे हैं और दो लाख लोग स्वच्छ पानी तक पर्याप्त पहुंच न होने के चलते हर साल अपनी जान गंवा देते हैं।' इन जटिल एवं विकराल स्थितियों एवं डरावने तथ्यों के बावजूद हम पानी का इस्तेमाल करते हुए पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है।

साक्षात्कार

अभिनेता का किरदार जैसा होना सामाजिक जुड़ाव से ही सम्भव

डॉ. मनीष जैसल

साक्षात्कारकर्ता आईटीएम विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के एचओडी हैं।

इनामुल हक़ उत्तर प्रदेश में जन्में एक अभिनेता हैं। उन्होंने जॉली एलएलबी 2 समेत दर्जनों फ़िल्मों में मुख्य भूमिका निभाई है। मुंबई में रहकर देश के अलग-अलग हिस्सों के दर्शकों के बीच अपनी पहचान बनाई है। फ़िल्मों के किरदार निभाते हुए क्या अभिनेता के दिलो दिमाग़ में मानवीय तथा संवैधानिक मूल्यों की समझ रहती है। इसी संदर्भ में हुए साक्षात्कार के अंश-

प्रश्न;- एक कलाकार के तौर पर सिनेमा और संवैधानिक मूल्य विषय पर पहली टिप्पणी आपकी क्या होगी ?

इतने भारी सवाल का एक कलाकार के लिए जवाब देना मुश्किल है। सिनेमा को मैं सशक्त माध्यम हमेशा से मानता रहा हूँ । सिनेमा में स्वेच्छा से अगर कुछ किया जाए तो संवैधानिक दायरे में रहकर समाज को कुछ ना कुछ ज़रूर दिया जा सकता है ।

प्रश्न-इनामुल हक़ क्या बनना चाहते थे? और जो हैं उससे कितना खुश हैं? समाज को एक कलाकार क्या कुछ दे पाता है?

मैं हमेशा से एक्टर ही बनना चाहता था। मेरी सात पुश्तें इस क्षेत्र में नही थी। मैं पहला हूँ। 12 साल की उम्र से नाटक करना आरम्भ किया था। वहीं से चाह लगी और कलाकार बन गया। और अब सीखते रहने वाला कलाकार हूँ। समाज को अभिनेता एक दिशा देने का कम कर सकता है। उसके निभाए किरदार दर्शकों के आदर्श बन जाते हैं। यह बड़ी ज़िम्मेदारी है।

प्रश्न- फ़िल्में देखते हुए आप बड़े हुए और फिर आपने फ़िल्मों में अभिनय भी करना शुरू किया। फ़िल्मों के विषय और मुद्दे जिस तरह से बदले हैं उस पर क्या कहना चाहते हैं ।

मैं इतना बूढ़ा तो नही हूँ । मुझे और हमारी पीढ़ी को आज़ादी थाली में सजी सजाई मिली । ऐसे में हमें कोई संघर्ष समाज में ना देखने को मिला, ना फ़िल्मों में। हमारी पीढ़ी ने जब होश सम्भाला तो 80-90 का दौर चल रहा था। हालाँकि तब भी हमने आज़ादी के पहले और उसके बाद की कुछ फ़िल्में देखी। फ़िल्में देखते हुए ही ये पता लगा कि आज़ादी के योगदान में नुक्कड़ नाटकों ने भी अपनी भूमिका निभाई। मैंने भी नुक्कड़ किए। नाटक किए। फिर फ़िल्मों की ओर आया था । लेकिन मुझे लगता है कि हर दौर में फ़िल्मकारों ने सवाल तो उठाए हैं। कई बार सीधे तो कई बार घुमा फिर कर ही सही। ब्रेख्त की मुझे एक टिप्पणी याद आ रही है। अगर किसी सरकार का अपनी जनता पर से विश्वास उठ जाए तो सरकार को चाहिए कि जनता को उखाड़ फेंके और अपने लिए नई जनता बना ले। यह एक अजीब सी टिप्पणी है। लेकिन लोगों को ये समझ आया कि ब्रेख्त दरअसल कहना क्या चाहते हैं।

मैं ये ज़रूर कहूँगा उस दौर में पढ़े लिखे लोग सिनेमा बना रहे थे। अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी और नागरिक होने के कर्तव्य को एक फ़िल्मकार के नाते निभा रहे थे। संभवतः तभी वो फ़िल्में हमें आज भी याद आती हैं। ग़रीबी, असमानता, अछूत, पूँजीवाद के ख़िलाफ़ जैसे विषय उस दौर में दिखते थे। और बाद के सिनेमा में नही दिखता उसके पीछे एक ही कारण हो सकता है वो हैं अपनी ज़िम्मेदारियों से पीछे हट रहे हो ।

प्रश्न- 80 के दशक के बाद से सिनेमा के विषयों और मुद्दों में बड़े स्तर पर बदलाव देखने को मिलते हैं। टीवी का आना भी

एक बड़ा कारण लगता है आपको? और क्या कारण रहे होंगे फ़िल्मों में मूल्य के ग़ायब होने के।

देखिए इस दौर में एक हाथी आया, उसने सभी को रौंदना शुरू कर दिया। लोग कितना भी बचते ये हाथी अपना असर दिखाता ही। और इस हाथी का नाम है बाज़ार। बाज़ार के चलते सिनेमा जो आर्ट हुआ करता था अब प्रोडक्ट बन गया। अब प्रोडक्ट फिर बाज़ार में बिकने लगा। नफ़ा नुक़सान तक लोग सोचने लगे। इसीलिए विषय और मुद्दे भी संभवतः बदलने लगे। पहले लोग सिनेमा से संदेश कहते थे, अब पैसा कमाने कमाना मुख्य है बात तो कुछ भी कही जा सकती है। इसीलिए हमारे सिनेमा में 20 साल तक घोड़े पर डाकू ही घूमते दिखे। गोली बारूद, बंजर ज़मीन। सब कुछ एक जैसा हमें दिखता है। आप देखिए इन्हीं बीस सालों के हमारे सिनेमा में एक हीरो है एक हीरोईन है और एक विलेन नाम की बाधा है। प्यार पाने की कहानी को दर्शक 3 घंटे तक देख रहा था। इसके चलते सामाजिक सरोकार शायद पीछे रह गए। कुछ लोग इसमें भी रहे जो अपना काम करते रहे। लेकिन उनकी संख्या बहुत कम थी। ऋषिकेश मुखर्जी, गोविंद निहलानी, श्याम बेनेगल आदि ने इसी दौर में समाज के हक़ में फ़िल्में बनाई।

प्रश्न- सिनेमा परसेप्शन भी बनाता है । ऐसे में दर्शकों के बीच फ़िल्म निर्माताओं का ये प्रोडक्ट नकारात्मक रूप में भी जा रहा है। क्या आप मानते हैं ?

बिल्कुल। एक अनपढ़ निर्माता फ़िल्म बनाएगा तो उसका प्रोडक्ट दर्शकों को ख़राब करेगा ही। फ़िल्म निर्माता एक लाला की भूमिका में है उसको अपना माल बेचकर पैसे कमाने हैं। वही लाला अपने जीवन में 70 काम संविधान की धज्जियाँ उड़ाते हुए कर रहा है तो आप उससे क्या उम्मीद करेंगे कि उसकी फ़िल्म में सामाजिक संदेश होगा? आप देखिए ना फ़िल्मों में एक पुलिस वाले, या एक मुस्लिम की स्थिति आपको कैसे दर्शकों के बीच रखी गयी। दर्शक ख़ुद भी अब इसे समझने लगा है । आपको कितने मुस्लिम ऐसे दिखते हैं जो गले में साफ़ा डालके, सर पे टोपी पहले, आँखों में सुरमा लगाए होते हैं ? लेकिन सिनेमा में आपको दिखेगा । यह स्टीरियोटाइप सिनेमा ने बनाकर दिया है । और नई पीढ़ी जो सामाजिक नही है उसके लिए यह घातक है।

प्रश्न- ओटीटी पर भी सेन्सरशिप की वकालत करते हैं आप? क्या यहाँ मानवीय मूल्यों के साथ फ़िल्में बन रही हैं?

देश ही नहीं पूरी दुनिया में सेन्सरशिप जैसी व्यवस्था सिर्फ़ अपने ख़ुश होने के लिए बनी है। कुछ भी सेंसर कर पाना मुश्किल है। कितनी पॉर्न वेबसाइट, और ना जाने क्या क्या इंटरनेट पर खुलेआप पड़ा है। क्या करेगा सेंसर बोर्ड। लोग चाह लें तो अपनी बात किसी भी हद तक जाकर कह सकते हैं। फ़िल्मकार के अंदर मोरल वैल्यू होनी ज़रूरी हैं । बिना गाली, सेक्स हिंसा, अश्लीलता के कोई फ़िल्म बनाई जाये ऐसी कोशिश करनी चाहिए। रियलिज़्म के नाम पर नंगापण को सपोर्ट नही कर सकते। हमारी ही फ़िल्मों में वर्षों तक किस सीन को फूलों के मिलन से दिखाया ही था । समाज इतना खुल जाएगा कि सीधे पॉर्न जैसा कंटेंट पारिवारिक माहौल में चले ऐसी उम्मीद नहीं थी। इससे फ़िल्मकारों को बचना चाहिए।

यहाँ मैं एक बात और जोड़ना चाहता हूँ इधर के 10 वर्षों में सिनेमा बनाना आसान काम नही रह गया। फ़िल्म से पहले जो बड़े बड़े डिस्क्लेमर आप देखते हैं वो दरअसल फ़िल्मकार की चिंता का असर है। सिगरेट के सीन के दौरान, किसी जाती धर्म,सम्प्रदाय को ठेस नही पहुँचाना, जानवर का इस्तेमाल ना होना जैसे तमाम बातें फ़िल्मकार को अब लिखनी पड़ती है। और इस लिए ताकि समाज का कब कौन सा वर्ग आगे फ़िल्म को चुनौती दे दे पता नहीं। सेंसरबोर्ड के होने के बावजूद भी फ़िल्मों से जुड़े लोगों के लिए समाज के कुछ ख़ास वर्ग हाथ, नाक कान गला काट देने की बात किस हक़ से कह लेते हैं यह भी उन्हें सोचना चाहिए। सरकारों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

सीसीटीवी एवं वीडियोग्राफी की निगरानी में होगी मतगणना : अक्षत जैन

1 जून तक मतगणना संबंधी व्यवस्था हो चाक-चौबंद

बैतूल। मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं स्वीप के नोडल अधिकारी अक्षत जैन ने कहा कि मतगणना संबंधी समस्त व्यवस्थाएं 1 जून तक समय-सीमा में कर लें। सभी सुनिश्चित कर लें कि मतगणना के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होना चाहिए। श्री जैन शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में 4 जून को होने वाले मतगणना की पूर्व तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार मतगणना स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था, मीडिया सेंटर, काउंटिंग टेबिल्स, स्ट्रांग रूम सुरक्षा, मतगणना स्थल पर मीडिया की भूमिका, कम्यूनिकेशन रूम, परिणामों की आमजन को प्रत्येक राउंड की जानकारी आदि की व्यवस्थाओं पर बिंदुवार चर्चा की।

सीसीटीवी की निगरानी में होगी मतगणना- प्रभारी अधिकारी मनीष पालेवार ने बताया कि 100 सीसीटीवी की निगरानी में मतगणना की जाएगी। मीडिया गेट एवं मुख्य द्वार पर 2 सीसीटीवी कैमरे, मतगणना कक्ष के बाहरी गैलरी, पोस्टल बैलेट एवं स्ट्रांग रूम से मतगणना कक्ष के एंट्री गेट पर 25 सीसीटीवी कैमरे एवं 11 टीव्ही स्क्रीन लगी है। इसी तरह राजनैतिक दलों प्रतिनिधियों के आने जाने वाले मार्ग एवं बाहरी बरामदे में 21 सीसीटीवी कैमरे तथा मतगणना कक्ष के अंदर कुल 5 विधानसभा वार 49 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए है। इसके अलावा कंट्रोल रूम में 2 टीव्ही स्क्रीन की व्यवस्था की गई है।

वीडियोग्राफी के साथ पारदर्शिता- प्रभारी अधिकारी श्री पालेवार ने बताया कि प्रत्येक विधान सभा स्ट्रांग रूम पोस्टल बैलेट स्ट्रांग रूम खोलने के दौरान एवं स्ट्रांग रूम से मतगणना कक्ष के एंट्री गेट पर मशीनों के मूवमेंट को 6 वीडियोग्राफी के माध्यम से कवर किया जाएगा। मतगणना कक्ष हेतु 2 कक्ष प्रत्येक विधानसभा व 1 कक्ष पोस्टल बैलेट हेतु कुल 5 विधानसभा की 11 कैमरों से वीडियोग्राफी होगी। उन्होंने बताया कि मतगणना स्थल पर निर्मित स्टेज के लिए 1 कैमरा तथा ईव्हीएम, वीवीपीएटी मशीन की सीलिंग के दौरान 5 कैमरे वीडियोग्राफी से निगरानी करेंगे। इसी तरह मतगणना स्थल के संपूर्ण परिसर, मीडिया कक्ष, सुरक्षा जांच प्रक्रिया की समय-समय पर एक कैमरे से वीडियोग्राफी होगी।

आमला छोड़ शेष विकासखंड के लिए 15-15 राउंड- मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री जैन ने कहा कि बैतूल जिले की सभी 5 विधानसभा क्षेत्रों के लिए आमला को छोडकर 15-15 राउंड मतगणना के होंगे। आमला में मतगणना के 14 राउंड होंगे। उन्होंने बताया कि ईवीएम की मतगणना बैतूल जिले की 5 विधानसभा क्षेत्रों के लिए बैतूल में ही होगी। हरदा, हरसूद और टिमरनी में ईवीएम की गणना उनके जिला मुख्यालय पर ही होगी। परंतु इन 3 जिलों के पोस्टल बैलेट की गणना बैतूल में बैतूल के पोस्टल बैलेट के साथ होगी।

विद्युत व्यवस्था रहे अपडेट- श्री जैन ने कहा कि मतगणना स्थल पर लोक निर्माण एवं विद्युत आपसी समन्वय से यह सुनिश्चित करें कि मतगणना स्थल पर विद्युत आपूर्ति किसी भी स्थिति में निर्वाध जारी रहे। मतगणना स्थल पर विद्युत आपूर्ति से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं हो। विद्युत प्रदाय के कार्य अतिरिक्त जनरेटर्स की व्यवस्था रखेगे।

सुरक्षा व्यवस्था- मतगणना स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था के बारे में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुश्री कमला जोशी ने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था तीन स्तर पर की गई है। बाहरी सर्किल की सुरक्षा स्थानीय पुलिस के पास रहेगी। इस सर्किल में मतगणना केन्द्र से 100 मीटर की दूरी में वाहन प्रतिबंधित रहेंगे। यहां प्रवेश द्वार अर्द्ध सैनिक बल की निगरानी में रहेगा। अधिकृत प्रवेश पत्र के बिना प्रवेश नहीं दिया जाएगा। कानून व्यवस्था की स्थिति में मुख्य द्वार पर कार्यपालिका मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए है।

मतगणना कार्य को अति संवेदनशीलता के साथ पूर्ण कराएं एडीएम राजीव नंदन

बैतूल। एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव ने कहा कि मतगणना का कार्य अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ निष्पादित किया जाए। इसमें त्रुटि के लिए कोई स्थान नहीं है। आपको जो भी संशय हो इसी प्रशिक्षण में दूर कर लें। लोकसभा निर्वाचन 2024 के मतगणना के दस दिन पूर्व सहायक रिटर्निंग अधिकारियों को मतगणना कार्य प्रणाली के बारे में मुख्य ट्रेनर श्री विजयंत ठाकुर ने प्रशिक्षण के माध्यम से की जाने वाले कार्यों की समीक्षा की। कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार एसडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हुए इस प्रशिक्षण सत्र में उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद, एसडीएम राजीव कहार, तृप्ति पटेरिया, शैलेन्द्र बड़ोनिया एवं सभी एआरओ, तहसीलदार आदि उपस्थित थे।

अभिकर्ता की नियुक्ति सतर्कता से प्रशिक्षक विजयंत ठाकुर ने कहा कि राजनैतिक दल अथवा प्रत्याशी अभिकर्ताओं की नियुक्ति करेंगे। आप लोगों को ध्यान रहे कि निम्नलिखित में से कोई व्यक्ति अभिकर्ता नहीं हो-

1. केन्द्र या राज्य का कोई मंत्री।
2. नगर निगम का मेयर, नगर पालिका जिला जनपद पंचायत का अध्यक्ष।
3. केन्द्र राज्य की पीएसयू शासकीय बॉडी कार्पोरेशन का अध्यक्ष सदस्य।
4. शासन की अनुदान प्राप्त संस्था का पार्ट टाइम वर्कर या शासन से मानदेय प्राप्त करने वाला।

इस बार जमकर तपेगा 'नौतपा'

पारा बनाएगा उच्चतम रिकॉर्ड, आज से नौतपा की शुरुआत

संजय द्विवेदी, बैतूल। पिछले कई सालों में अधिकांश समय ऐसा अवसर आया, जब नौतपा में बारिश तक हो गई..इसके चलते नौतपा को लोग नो- तपा भी कहने लगे थे। लेकिन इस बार उलट स्थिति है और सूर्य का प्रचंड स्वरूप लोगों को देखना-झेलना पड़ेगा। गौरतलब है कि 24 मई यानी आज से लेकर 1 जून तक रहने वाला है. यानी पूरे 9 दिनों तक सूर्य की किरणें सीधे पृथ्वी पर पड़ेगी, जिससे तापमान गर्मी के रिकॉर्ड तोड़ेगा. ज्येष्ठ मास में जब सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है तो नौतपा लग जाता है। ऐसे में सूर्य से निकलने वाली तेज किरणों से धरती तपने लगती है ।

हालांकि नौतपा के पहले ही गर्मी के प्रचंड प्रहार से जिलेवासी परेशान हो गए है। गर्मी इतनी अधिक तेज पड़ने लगी है कि कूलर, पंखे भी गरम हवा फेंकने लग गए है। तापमान में तेजी से बढ़ोतरी होने लगी है। 25 मई यानि आज से नौतपा की शुरूआत होने बाली है। इस बार नौतपा में तेज गर्मी पड़ने की संभावना बनी है। गत सोमवार को जिला मुख्यालय पर तेज बारिश हई थी और उसके बाद तापमान में गिरावट दर्ज की गई थी, लेकिन बुधवार से तेज धूप और गर्मी पड़ने से अधिकतम तापमान 41 डिग्री के पार पहुंच गया। गुरुवार- शुक्रवार को भी सुबह से शाम तक तेज धूप खिलने के कारण गमों से लोगों के हाल बेहाल हो गए। गर्मी से बचने के लिए लोग कूलर, पंखों का सहारा ले रहे है। धूप इतनी तेज है कि दोपहर के समय लोग घरों से निकलने में परहेज कर रहे है। सेहत को ध्यान में रखते हुए लोग सावधानी से घर से निकलने के लिए मजबूर है। धूप से बचने के लिए गमछे, चश्में और छाते का सहारा लेने को मजबूर होना पड़ रहा है। इधर घरों के भीतर कूलर, पंखे भी गर्मी के कारण गर्म हवा फेंकने लग गए है। गर्मी जाते-जाते अपना रौद्र रूप दिखाने लगी है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान में उतार-चढ़ाव होने की संभावना बनी है।

नौतपा की शुरुआत - नौतपा के पहले ही गर्मी के तीखे तेवर देखने को मिल रहे है। आज 25 मई से नौतपा की शुरुआत हो जाएगी। इस बार नौतपा भी जबरदस्त तपने की संभावना बनी हुई है। अक्सर देखने में यह आता है कि नौतपा के 9 दिन भीषण गर्मी पड़ती है। कई बार नौतपा के आखिरी दिनों में बारिश से ठंडक मिलती है, लेकिन इस बर नौतपा के कुछ दिन तेज गर्मी पड़ने की अधिक संभावना जताई जा रही है। नौतपा के बाद जून माह की शुरूआत हो जाएगी, 7 मई से मृग नक्षत्र लगेगा। मृग नक्षत्र में इस बार प्री-मानसून बारिश होने की संभावना बनी है। मृग नक्षत्र तक जिलेवासियों को गर्मी का सामना करना पड़ सकता है।

डॉक्टर दे रहे धूप से बचाव के टिप्स

बदलते मौसम और गर्मी के कारण लोगों की सेहत भी बिगड़ने लगी है। डॉक्टर लोगों को इस गर्मी से बचने की सलाह दे रहे है। डॉक्टरों का कहना है कि जब भी घर से निकले खाना खाकर या नाश्ता करके निकले और गर्मी के दिनों में पानी अधिक पीए, ताकि डिहाईड्रेशन का शिकार न हो। गर्मी के दिनों में पानी की कमी से सेहत बिगड़ जाती है, इसलिए दिन में लगभग 10 से 12 गिलास पानी जरूर पीना चाहिए।

लू से बचने स्वास्थ्य विभाग ने जारी की एडवाइजरी

बैतूल। वर्तमान में तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। गर्म हवाएं चलने से लू लगने की आशंका बढ़ गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनमानस को लू से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी कर ज्यादा समय तक घर में रहने एवं अनावश्यक घर से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी गई है। मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उइके ने बताया कि आमजन अति आवश्यक कार्य होने पर ही घर से बाहर निकलें, अनावश्यक बाहर न निकलें। घर से बाहर निकलते समय पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं, खाली पेट घर से बाहर न जाएं, इससे लू लगने का खतरा बढ़ जाता है। दिन में कम से कम 12 से 15 गिलास पानी जरूर पियें। लू से बचाव के लिए देशी घरेलू उपाय आम का पना, नींबू का पानी एवं प्याज के रस का उपयोग करें। बाहर निकलते समय सूती कपड़े से चेहरा और सर ढककर रखें तथा पानी साथ में जरूर रखें। पहनने के लिए सूती कपड़ों का अधिक उपयोग करें। अगर लू के लक्षण जैसे मितली आने, गला सूखने तथा बुखार का प्रकोप होने जैसा लगे तो तत्काल डॉक्टर से संपर्क करके उचित उपचार करायें। स्वास्थ्य विभाग द्वारा ठन्डे वातावरण से गरम या गरम वातावरण से ठण्डे में अचानक न जाने की सलाह दी गई है।

अवैध कबाड़ व्यवसाय का केंद्र बनते जा रही है पवित्र नगरी

कृषि सामग्री चोरी से परेशान है किसान

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर जिले का सबसे बड़ा अवैध कबाड़ का केंद्र बनता जा रहा है। जिसका खामियाजा नगर सहित संपूर्ण क्षेत्र को भुगतना पड़ रहा है। जिससे एक ओर जहां हर गली मोहल्ले में कबाड़ी पैदा हो रहे हैं। वहीं किसानों की मोटर कृषि सामग्री केवल चोरी होना आम हो गया है। शुक्रवार को फिर विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम कपासिया में अज्ञात चोरों ने खेतों में लगी मोटरों से केबल चोरी कर लीया। जिसकी शिकायत ग्रामीणों ने थाना मुलताई में की है यही नहीं क्षेत्र में कृषि सामग्री की चोरी की घटनाएं बढ़ते जा रही है। बीते दिनों ग्राम डहुआ के ग्रामीणों ने भी उनके खेतों पर लगी मोटरों के केबल चोरी होने की शिकायत की थी।

केवल मोटर चोर बने मुसीबत- अब ग्राम कपासिया में भी केबल चोरी की घटनाएं सामने आ रही है। जिससे किसान परेशान हो रहे हैं। ग्राम कपासिया निवासी नितिन मुन्नालाल, गोविंद बकारम, हरिसिंह रघुवंशी, मधु कौशिक, आनंद एवं आशीष आदि ने दुनावा पुलिस चौकी में शिकायत करते हुए बताया कि उनके खेतों पर कुएं और ट्यूबवेल में लगी मोटर से कुछ अज्ञात चोरों द्वारा केबल काटकर चोरी कर ली गई है। केबल चोरी होने के कारण खेतो में लगी सब्जी की फसल की सिंचाई करने में समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

कब होंगे कबाड़ व्यवसाय पर अंकुश के प्रयास- मुलताई नगर का कबाड़ा व्यवसाय संभाग का सबसे बड़ा

कबाड़ा व्यवसाय बन गया है। इसकी व्यापकता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि नगर के कबाड़ व्यवसायियों ने कबाड़े को फोल्ड कर बारीक करने के लिए करोड़ों रुपए की मशीनरी लगा कर रखी है और जिसके माध्यम से 1 घंटे के अंदर किसी भी बड़े वाहन का वजूद समाप्त कर दिया जा सकता है। और इसे खोजना तो दूर इसके अवशेष भी समाप्त हो जाते हैं। इसे ट्रैकों में भरकर महाराष्ट्र भेज दिया जाता है। एक अनुमान के अनुसार जिला परिवहन विभाग में पूरे महीने में जितने पुराने बेकार हो गए कबाड़ के वाहनो को कबाड़ मे बेचे जाने की अनुमति दी जाती है। उससे कई गुना अधिक वाहन मुलताई नगर में प्रति सप्ताह काटे जाते हैं और कोई यह देखने वाला नहीं कि यह जो वाहन , या लोहा खरीदा जा रहा है। इसके कागजात है अथवा नहीं।

छह ट्रकों से पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 900 बकरा-बकरी पकड़े

बैतूल। मध्यप्रदेश के बैतूल में पुलिस ने बकरा-बकरियों के परिवहन के मामले में बड़ी कार्रवाई की है। झल्लार थाना पुलिस ने बैतूल परतवाड़ा स्टेट हाईवे पर बीती रात 6 ट्रक पकड़े हैं। जिनमें क्रूरतापूर्वक भरकर अवैध रूप से 900 बकरा-बकरियों को ले जाया जा रहा था। आधा दर्जन आरोपियों को भी गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज किए हैं। पुलिस कंट्रोल रूम से दी गई जानकारी में बताया कि बैतूल जिले में अवैध रूप से पशुओं के क्रूरता पूर्वक परिवहन की लगातार शिकायतें प्राप्त हो रही थी। जिस हेतु पुलिस अधीक्षक बैतूल और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बैतूल द्वारा सभी अनुविभागीय अधिकारी एवं थाना प्रभारियों को कार्यवाही किए जाने के निर्देश दिए गए थे।

झल्लार पुलिस ने की कार्रवाई- थाना झल्लार पुलिस द्वारा 23 मई की रात्रि में करीब 12.30 बजे कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से बकरा-बकरी का परिवहन करते हुए 6 ट्रक पकड़े गए। इनमें कुल 900 बकरे-बकरियां थे। इन्हें ट्रकों में क्रूरता पूर्वक भरा गया था। यह ट्रक यूपी के झांसी से हैदराबाद जा रहे थे।

इन ट्रकों से हो रहा था परिवहन- पुलिस ने क्रूरता पूर्वक पशु परिवहन करते हुए छह ट्रक पकड़े। इनमें यूपी-सीटी-6843, यूपी-93ध्सीटी-6331, एमपी-09 एचएच-3908, यूपी-92 एटी-2308, आरजे-11 जीसी-4563 और एमपी-09 एचएच-4922 शामिल हैं।

यह ले जा रहे थे बकरियों को- इस मामले में पुलिस ने मोनू यादव 25 साल निवासी पिछोर-शिवपुरी, शाहिल खान 22 साल निवासी अमोला-शिवपुरी, राजेन्द्र लोधी 25 साल निवासी माजरा सापई-शिवपुरी, प्रताप सिंह 37 साल निवासी

दौलतपुर-कानपुर देहात, संजीव कुमार परिहार 43 साल निवासी करौंदी कॉलोनी शिवपुरी और पवन गोस्वामी 40 साल निवासी जोशी मोहल्ला शिवपुरी पर एफआईआर दर्ज की है।

पुलिस ने की कार्रवाई- इस प्रकरण में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 11 (घ) पशु क्रूरता अधिनियम व मोटर यान अधिनियम की धारा 66ध्192-ए के तहत अपराध पंजीबद्ध कर कार्यवाही की है। एसपी निश्चल एन झारिया ने पूरे मामले की जांच के लिए एएसपी के नेतृत्व में एक टीम बनाई है। इसके बाद स्थानीय पुलिस ने यह कार्रवाई की।

यूपीआई के जरिए बैंक खाते से उड़ा लिए 7.54 लाख रुपये

बैतूल। यूपीआई अकाउंट से लगभग आठ लाख रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। जयस संगठन के नेतृत्व में शिकायतकर्ता शांति बाई ने इस मामले की शिकायत एसपी से की है। जिले के बोरीकास ग्राम की निवासी शांति बाई पति संजय पिता कुंवरलाल उइके ने एसपी के पास शिकायत दर्ज करवाई है कि उनके बंधन बैंक के खाते से यूपीआई के माध्यम से 7 लाख, 54 हजार रुपये की ठगी की गई है। शांति बाई ने अपने शिकायत पत्र में बताया कि उनके बैंक खाते में मेंढा डैम की मुआवजा राशि प्राप्त हुई थी। उन्होंने अपने बैंक मोबाइल नंबर से ट्रांजेक्शन की डिटेल्स निकाली तो चौंकाने वाली बात सामने आई। उन्होंने पाया कि यूपीआई के माध्यम से उनके बोरीकास गांव में रहने वाले एक व्यक्ति द्वारा यह राशि निकाली गई है। वह इससे पहले भी उनके गांव के एक व्यक्ति से करीब 6 लाख रुपये की ठगी कर चुका है। शांति बाई ने अपनी शिकायत में यह भी उल्लेख किया कि उन्हें शक है कि इस ठगी में बंधन बैंक की भी साठ-गांठ है। बैंक कर्मचारियों ने उनके अनपढ़ होने का फायदा उठाकर उन्हें यूपीआई और एटीएम की कोई जानकारी नहीं दी। यहां तक कि पासबुक और एटीएम भी नहीं दिया। इसके बावजूद यूपीआई बना कर पैसे निकाले गए। जबकि एटीएम होने पर ही फोन पे जैसे ऐप्स चल सकते हैं। उन्होंने एसपी से आग्रह किया कि उचित जांच कर कड़ी कार्यवाही की जाएं और उनका पूरा पैसा वापस दिलाया जाएं। मामले की शिकायत करने के लिए शांति बाई के साथ महेश शाह उइके, अनिल उइके, अजय दुर्वे और अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दिल्ली का एनजीओ बैतूल में कैंसर पीड़ितों के नाम कर रहा चंदा उगाही

बैतूल। जिला मुख्यालय पर दिल्ली की एक सामाजिक संस्था के सदस्य चौक चौराहों पर चंदा करने में मशगूल है। बाकायदा बैनर पोस्टर लगाकर भरी धूप में एनजीओ के सदस्य जो चंदा कर रहे है वह कैंसर पीडितों के लिए किया जा रहा है। हालांकि कैंसर पीड़ितों के लिए इस तरह दिल्ली के किसी एनजीओ द्वारा बैतूल जैसे पिछड़े अंचल में आकर चंदा करना संदेहास्पद जरुर है। जब चौक चौराहों पर अनजान लोगों कैंसर पीड़ितों के लिए चंदा जुटाना जागरूक नागरिकों को नागवार गुजरा तो उन्होंने इस संबंध में समाजसेवी एवं कैंसर फाईटर बबलू हेमंत चंद्र दुबे से चर्चा की। श्री दुबे को जैसे ही जानकारी तो उन्होंने दोनों युवकों के पास पहुंचकर उन्हें समझाइश दी कि- यह बैतूल है यहां कैंसर पीडितों के लिए चौक चौराहों पर चंदा नहीं किया जाता। जब श्री दुबे ने एनजीओ के सदस्यों से जानकारी लेना शुरु किया तो वे घबरा गए और चंदा न करने का आश्वासन देते हुए वापस दिल्ली लौटने की बात कही। हालांकि दोनों युवकों ने अगले दिन फिर दूसरे चौराहे पर अपने बैनर पोस्टर टांग दिए और चंदा करने में जुट गए।

सोसायटी फॉर कैंसर रिसर्च ऑर्गनाइजेशन दिल्ली के नाम पर किया जा रहा चंदा- हमारे द्वारा मामले की तह तक जाने के लिए जब एनजीओ के सदस्य अजय मिश्रा से उनके मोबाइल नंबर पर चर्चा की तो उन्होंने बताया कि सोसायटी के सर ने दो लोगों को चंदा करने के लिए बैतूल भेजा है। उनका कहना है कि चंदे में मिलने वाली राशि का उपयोग गरीब एवं बीपीएल कार्डधारी कैंसर मरीजों के उपचार में उपयोग की जाती है। जब उनसे पूछा गया कि दिल्ली जैसे बड़े और सम्पन्न शहर को छोडकर

बैतूल जैसे छोटे शहर में चंदा क्यों किया जा रहा है तो इस सवाल के जवाब में हड़बड़ाते हुए अजय मिश्रा ने कहा कि उन्हें डॉ. जावेद अनवर सर ने बैतूल भेजा है। यहीं नहीं, देश के अन्य शहरों में भी सोसायटी फॉर कैंसर रिसर्च आर्गनाईजेशन दिल्ली के नाम पर दो-दो सदस्य चंदा कर रहे है। क्या जिस शहर से चंदा किया जा रहा है उसी शहर के मरीजों को चंदे से उपचार में मदद मिलती है, इस बात पर अजय मिश्रा चुप रह गए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वे लोग डॉ जावेद अनवर के कहने पर दिल्ली लौट गए है। बुधवार को लल्ली चौक जैसे व्यस्ततम चौराहे पर और गुरुवार को सदर में पीपल चौक पर दोनों युवक फर्जी तरह से चंदा करते नजर आए। गौरतलब है कि दोनों युवक अजय मिश्रा एवं अभिषेक विश्वकर्मा को समाजसेवी बबलू दुबे ने लल्ली चौक पहुंचकर समझाइश भी दी, लेकिन अगले दिन ये फिर पीपल चौक सदर पहुंच गए थे। अजय मिश्रा के मुताबिक वे दिल्ली लौट गए है। लेकिन जब इस संबंध में जावेद अनवर से बात की गई तो उन्होंने कहा कि उनके बंदे, अभी तीन चार दिन और बैतूल में रुकेंगे। जिले में दिल्ली जैसे शहर से आकर चंदा करने की जानकारी इस एनजीओ ने किसी भी संबंधित अधिकारी, विभाग के संज्ञान में नहीं लाई। सच सामने न आ जाए, इस डर से एनजीओ के सदस्य बार-बार अब चंदा न करने का हवाला दे रहे है, लेकिन कैंसर मरीजों के नाम पर इस तरह संवेदनाएं बटोरकर दिन दहाड़े की जा रही उगाही पर जांच की जानी चाहिए। साथ ही उक्त लोगों ने अब तक चंदा कितना किया और कितने मरीजों को इसका लाभ मिला, यह जानकारी सामने लाई जानी चाहिए। इधर जावेद अनवर का कहना है कि पिछले साल भी संस्था के एक सदस्य ने बैतूल में चंदा किया था, करीब 8 हजार रुपए की राशि जुटाई थी। बहरहाल एनजीओ के दोनों सदस्य जिले में है इस संबंध में पुलिस विभाग द्वारा जांच की जानी चाहिए, कहीं यह ठगी का नया तरीका तो नहीं है।

इनका कहना-

इस संबंध में आपके माध्यम से जानकारी मिली है, मैं चेक करवाता हूं।
-निश्छल झारिया, एसपी बैतूल

हार्ट अटैक से प्राचार्य का निधन, दोनों बेटियों ने दी मुखाग्नि

शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल झल्लार में थे पदस्थ केशोराव जौंजारे

बैतूल। शुक्रवार को जिला अस्पताल में भर्ती सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल झल्लार में प्राचार्य केशोराव जौंजारे का सुबह चार बजे हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया, वे 60 साल के थे एवं अपने परिवार के साथ जामठी भारत-भारती में रहते थे। उनका अंतिम संस्कार कोठीबाजार स्थित मोक्षधाम में किया गया। लोगों की तब आंखें नम हो गई जब उनकी दोनों बेटियों ने पिता को मुखाग्नि दी। बताया जाता है कि उनका कोई पुत्र नहीं था।

रात 2 बजे बिगड़ी थी तबीयत- बताया जाता है कि प्राचार्य केशोराव जौंजारे की रात बजे अचानक तबीयत बिगड़ गई थी। तब उनकी बेटी ने पडोसी उनके साथ बारीक खादीपुरे को फोन पर सारी स्थिति बताई और प्राचार्य की कार से

ही उन्हें लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। परिजनों द्वारा जिला चिकित्सालय बैतूल में भर्ती कराया गया। सुबह 4 बजे उनका निधन हो गया। शुक्रवार को दोपहर में उनके निज निवास ग्राम जामठी से शवयात्रा निकाली गई। शवयात्रा में सामाजिक बंधु, स्कूल का स्टाफ व मित्रगण सहित सैकड़ों लोग शामिल हुए। उनका अंतिम संस्कार मोक्षधाम कोठी बाजार में किया गया।

दोनों पुत्री सोनू और निधि ने दी मुखाग्नि- श्री जौंजारे की दो पुत्रियां है। शव को नम आंखों से दोनों पुत्रियां सोनू व निधि द्वारा मुखाग्नि दी गई। इस दृश्य को देख मौजूद लोगों की आंखे नम हो गईं। उनके पड़ोस में रहने वाले बारीक खादीपुरे ने बताया कि श्री जौंजारे ने कल शाम तक खेत में ट्रैक्टर से खेत की जुताई करवाई और मुझे साथ लेकर खेत में भी गए। खबर मिलते ही मैं रात को ही उनके घर पहुंचा और उन्हे उनकी ही कार से लेकर जिला चिकित्सालय आया। रास्ते में उन्होंने मुझसे बात भी करते रहे और मुझे सांत्वना देते हुए बोले कि काका आप चिंता मत करो मैं ठीक हूं। मैं उन्हे भर्ती करके घर आ गया लेकिन सुबह खबर मिली कि उनका निधन हो गया। शवयात्रा में शामिल लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जिले में गणना प्रेक्षक नियुक्त

धार। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के अंतर्गत धार के लिये मतगणना हेतु गणना प्रेक्षक नियुक्त किये गए हैं। जिसमें प्रेक्षक हिमांशु कुमार राय आईएएस-2010 को विधानसभा क्षेत्र कुक्षी, मनावर एवं धार के लिये नियुक्त किया गया है। प्रेक्षक धनंयज सुकदेव निकम एससीएस-2001 को विधानसभा क्षेत्र गंधवानी के लिये नियुक्त किया है। इसी प्रकार प्रेक्षक दत्तप्रसाद ध्यानदेव नडे एससीएस-2001 को विधानसभा क्षेत्र सरदारपुर, धरमपुरी एवं बदनावर के लिये नियुक्त किया है।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षकों के लिये लायजनिंग अधिकारी, निज सहायक एवं स्टोनोग्राफरों की नियुक्त किये जाने का आदेश जारी किया है।

पिता-मामा ने बेटी को दो लाख रुपए में बेचा

खरीदने वालों ने खेत में काम कराया, बंधक बनाकर रखा

रतलाम (नप्र)। रतलाम के सैलाना में पिता ने बेटी को उसके मामा के साथ मिलकर 2 लाख रुपए में बेच दिया। खरीदने वालों ने उसे बंधक बनाकर खेत में काम कराया। युवती ने भागकर अपने प्रेमी के पास पहुंची। दोनों ने कोर्ट में शादी कर ली है। युवती ने जिस युवक से शादी की, उसके पिता के साथ लड़की के पिता ने मारपीट की। पुलिस ने केस दर्ज किया है।

सैलाना थाना क्षेत्र की 18 साल की युवती ने रिपोर्ट दर्ज कराई है। युवती ने बताया वह एक युवक से शादी करना चाहती थी। इस बात को लेकर परिजन उसके साथ मारपीट करते थे। 11 फरवरी 24 को वह बिना बताए अपनी सहेली के घर चली गई। पापा ने गुमशुदगी दर्ज करवाई। 17 फरवरी को वह सैलाना थाने पहुंची। यहां पापा यह कहकर ले गए कि तेरी शादी तेरी मर्जी से करेंगे।

1 मार्च 2024 को पापा और मामा ने 2 लाख रुपए में उसे प्रेम पिता कालू निनामा निवासी परनाला (जिला प्रतापगढ़, राजस्थान) को बेच दिया। वहां इन दोनों और प्रेम के भाई मंसू ने बंधक बनाकर रखा। उससे घर और खेत का काम करवाया। 17 मार्च को वह वहां से भाग कर जिससे प्रेम करती थी, उसके पास चली गई। दोनों ने कोर्ट में शादी भी कर ली।

पिता ने धमकी दी है कि तुझे और जिससे शादी की है, वो जहां दिखेंगे जान ले लूंगा। गुरुवार को परिवारवालों ने ससुरालवालों के साथ मारपीट की।

युवक के पिता से मांगे 45 लाख रु.

युवती ने जिस युवक से शादी की है, उसके पिता ने भी युवती के पिता पर 45 लाख रुपए मांगने का केस दर्ज कराया है। उन्होंने बताया कि जब युवती थाने में बयान देने आई तो हमने भी उसे पिता के साथ जाने के लिए समझाया था। उसके पिता ने उसका दूसरी जगह रिश्ता किया और वह वहां से चली गई तो हमारी क्या गलती। तब से युवती का पिता, भाई, ताऊ, चचेरा भाई जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। डर के मारे मैं उन्हें 50 हजार रुपए दे चुका हूं। मुझे और परिवार को जिंदा जलाने की भी धमकी दी है। गुरुवार को भी इन्होंने मारपीट की।

उधारी नहीं चुकाना पड़े, इसलिए बैंककर्मी की हत्या

उज्जैन में आरोपी ने साथियों के साथ मिलकर गला घोंटा, चेहरा पत्थर से कुचला

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में 2.5 लाख रुपए उधार लेने वाले युवक ने बैंककर्मी की हत्या कर दी। वह रकम नहीं लौटाना चाहता था। बैंककर्मी को सुनसान जगह ले जाकर उसने बातों में उलझाया। यहां पहले से छिपे बैठे दो साथियों को बैंककर्मी के गले में रस्सी का फंदा डालने का इशारा किया, इसके बाद गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी। बाद में तीनों ने चेहरा पत्थरों से कुचल दिया।

मामला घट्टिया थाना क्षेत्र के बिछड़ोद का है। यहां गुरुवार को यूको बैंक के अस्थायी कर्मचारी लखन राठौर (26) का शव मां भवानी मंदिर के पास रसूलिया मार्ग पर नाले के किनारे मिला था। पुलिस ने इस मामले में शुक्रवार को तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। तीनों की उम्र 18 से 23 साल के बीच है।

घट्टिया थाना पुलिस के मुताबिक, बैंककर्मी के गले पर निशान और सिर में गंभीर चोट थी। हत्या का केस दर्ज कर पड़ताल शुरू की। पता चला कि बुधवार रात लखन, गांव के ही अजय उर्फ भूरा बैरागी के साथ बाइक से उज्जैन रोड की ओर गया था। कुछ समय बाद वह घर आया और मोबाइल चार्ज पर लगाकर नाग मंदिर की ओर चला गया। घटना में अजय की कोई इन्वॉल्वमेंट नहीं मिली।

पैसे लौटाने की बात कहकर साथ ले गया

एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया कि पूछताछ आगे बढ़ाई तो पता चला कि लखन के घर के पास ही रहने वाले जितेंद्र उर्फ कालू बैरागी से उसका पैसे का लेनदेन था। जितेंद्र के साथी सुमित बोडना और राजू मारू से अलग-अलग पूछताछ की गई। सख्ती पर तीनों टूट गए। उन्होंने बताया कि लखन, जितेंद्र को उधार लौटाने के लिए टोक रहा था। जितेंद्र ने सुमित और राजू के साथ हत्या की साजिश रची।

प्लान के मुताबिक बुधवार रात 9 बजे जितेंद्र, लखन को उसके घर से कुछ दूरी से पैसे लौटाने की बात कहकर बाइक से ले गया। उसने लखन को बातचीत में उलझाया, दोनों साथियों को लखन के गले में रस्सी का फंदा डालने का इशारा किया, गला घोंटने के बाद आरोपियों ने पत्थरों से उसका चेहरा बिगाड़ दिया।

युवक की पहचान करना आसान नहीं था

शव की शिनाख्त करने में ग्रामीणों को बड़ी मशक्कत करना पड़ी थी, क्योंकि युवक के सिर पर पत्थर से चोट के कारण चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था। फिर कुछ युवाओं ने कहा कि ये लखन जैसा दिखाई दे रहा है। इसके बाद लखन के बारे में तलाश की तो पता चला कि शव लखन का ही है।

व्यापारियों और ग्रामीणों ने किया था चक्काजाम

गुरुवार को पोस्टमॉर्टम के बाद जब एंबुलेंस से बैंककर्मी का शव बिछड़ोद पहुंचा तो उसे मुख्य मार्ग पर ही रोक लिया गया था। लोगों ने शव एंबुलेंस से बाहर नहीं निकाला। नगर बंद कर मुख्य मार्ग पर चक्काजाम कर दिया था। जब काफी देर तक पुलिस प्रशासन मौके पर नहीं पहुंचा तो ग्रामीणों ने पुलिस मुर्दाबाद के नारे लगाए।

एडिशनल एसपी नीतेश भार्गव, डीएसपी भारत सिंह यादव, भविष्य भास्कर सहित थाना घट्टिया, राघवी, तराना काा पुलिस बल मौके पर पहुंचा। एएसपी के आश्वासन के बाद लोगों ने चक्काजाम हटाया था। व्यापारियों और ग्रामीणों ने चेतावनी दी थी कि 48 घंटे में अगर आरोपी को गिरफ्तार नहीं कि या तो नेशनल हाईवे उज्जैन-कोटा मार्ग पर चक्काजाम करेंगे।

विद्वेष पूर्ण कार्रवाई को लेकर

जिला कांग्रेस कमेटी ने एसपी को ज्ञापन सौंपा...

नर्मदापुरम। पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराज पटेल सहित मोहन कहार पर सोहागपुर पुलिस द्वारा विद्वेष पूर्ण कार्यवाही किए जाने पर जिला कांग्रेस के नेतृत्व में आज कांग्रेसियों ने पुलिस अधीक्षक गुरुकरण सिंह को ज्ञापन सौंपा है जिसमे जनहित के मामले को लेकर सम्पूर्ण घटनाक्रम का विवरण दिया है। ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से पूर्व विधायक गिरिजा शंकर शर्मा, जिला कांग्रेस अध्यक्ष शिवाकांत गुड्डन पांडे, पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष कपिल फौजदार, प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता राजकुमार केलू उपाध्याय, पूर्व सोहागपुर नगरपालिका अध्यक्ष संतोष मालवीय, पूर्व नगर कांग्रेस अध्यक्ष पंकज राठौर, जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष विजय बाबू चौधरी, इटारसी नगर कांग्रेस अध्यक्ष मयूर जायसवाल, नेता प्रतिपक्ष होशंगाबाद नगरपालिका अनोखी राजोरिया, पूर्व नगर कांग्रेस अध्यक्ष अजय सैनी, केसला ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष हेमू कश्यप, सोहागपुर नगर कांग्रेस अध्यक्ष गजेंद्र चौधरी, अशोक जैन, राजेश बबलू राठौर, गोल्डी चौधरी, नीरज चौधरी, विजेंद्र राजपूत सहित अनेक कांग्रेस जन उपस्थित थे।

ग्रीष्म कालीन..

मूंग, उड़द खरीदी केंद्र चयन के लिए ऑनलाइन विज्ञापन जारी हो...

नर्मदापुरम। जिले में ग्रीष्मकालीन मूंग सहित उड़द के पंजीयन के लिए 132 पंजीयन केन्द्र स्थापित किए गए है। जिसमें तहसील डोलरिया में 13, इटारसी में 15, पिपरिया में 11, बनखेड़ी में 15, बाबई में 17, सिवनी मालवा में 32, सोहागपुर में 20 एवं तहसील नर्मदापुरम में 9 पंजीयन केन्द्र बनाये गये है। इन पंजीयन केन्द्र पर किसान अपने पंजीयन 20 मई से 5 जून तक अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने सभी संबंधितों को दिए है कि वे पंजीयन केंद्रों पर समस्त पात्र कृषकों के पंजीयन की कार्यवाही सुनिश्चित करें। किसानों से ग्रीष्म कालीन मूंग और उड़द खरीदी पंजीयन के पश्चात् अब महत्वपूर्ण कार्य खरीदी केंद्र के लिए समितियों और वेयरहाउस चयन होना बाकी है। कलेक्टर को इस काम में पारदर्शिता रखनी चाहिए। जिससे डिप्टी डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर इस मामले में लेनदेन कर खरीदे केंद्र नहीं बना पाए.. क्योंकि चना खरीदने को लेकर बनाए गए खरीदी केंद्रों के कारण जहां प्रशासन की थू-थू हुई थी डिप्टी डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर कृषि मंत्री द्वारा लताड़े गये थे। चयनित वेयरहाउस सहित सोसायटियों से डिप्टी डायरेक्टर ने मोटी राशि वसूली थी। सांठ-गांठ कर बनाए गए चना खरीदी केंद्रों की शिकायत कृषि मंत्री के पास पहुंचीं थीं। यहां एक बार फिर मूंग खरीदी के लिए डिप्टी डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर खरीदी केंद्र बनाने के लिए एसोडीओ के जरिए सर्वे करा रहे हैं। किसानों के पंजीयन केंद्र बनाए जाने के बाद इस महत्वपूर्ण कड़ी पर प्रशासन को ध्यान देना चाहिए। चने का रेट मंडी में ज्यादा होने से सोसाइटियों द्वारा इस बार चना खरीद नहीं पाई। उसने वही चना खरीदा जो मंडी से रिजेक्ट हुआ था। डिप्टी डायरेक्टर द्वारा आफ लाइन चयनित किए गये वेयरहाउस सहित सोसायटियों को काफी नुकसान उठाने की बात सामने आ रही है। प्रशासन को चाहिए वेयरहाउस और मूंग खरीदी केंद्र के लिए वह ओनलाइन प्रक्रिया अपनाएं उसके लिए समाचार-पत्र में विज्ञापन जारी कर अपनी मांगानुसार वेयरहाउस और सोसायटियों से निविदाएं आमंत्रित कर पहले से ही खरीदी व्यवस्था पुख्ता रखें। क्योंकि उत्पादन भंडारन के लिए चयनित वेयरहाउस सहित सोसायटियों को खरीददार नियुक्ति को लेकर लाखों की राशि कृषि अधिकारी सीधे सीधे काम देने के ऐवज वसूलते हैं।

नगरपालिका के जिम्मेदार दायित्व निर्वहन में फिसड्डी ..

नर्मदापुरम। सोशल मीडिया पर आज नगर मे कर्तव्य निष्ठ नगरपालिका अधिकारी और नपाध्यक्ष की जिम्मेदारी और उनके दायित्व निभाने की पोल खोलती चौंकाती एक रपट आई। खबर में बताया गया कि नगर में जिम्मेदारियों का निर्वहन नहीं हो पाने से कई स्थानों पर बहुत समय तक सफाई नहीं होने से लोग परेशान हो रहे हैं। जिसमें वार्ड नं 2 का उल्लेख किया गया यहां नाली की सफाई नहीं होने से गंदा पानी लोगों के घरों में घुस रहा है। ओवरफ्लो होने के कारण नाली का पानी अंदर आ रहा है जिससे बीमारी फैलने का डर बना हुआ है। इस क्षेत्र में अतिक्रमण भी है और नगर पालिका प्रशासन के कर्मचारी यहां सफाई नहीं करते जिससे लोगों को परेशानी हो रही है। वार्ड 2 और 3 की वाटर लाइन होने के कारण यहां के विकास कार्य और साफ सफाई पर नगर पालिका बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही है । कई दिनों तक यहां साफ-सफाई नहीं होती जिससे कचरों के ढेर लग जाते हैं और बदबू से लोग परेशान हैं। सबसे मजेदार बात यह है कि वार्ड नंबर दो में विधायक का पैतृक निवास है। शासकीय भूमि पर अतिक्रमण, पार्किंग की दिक्कत क्षेत्र में कई स्थानों पर शासकीय जगह पर लोगों ने अतिक्रमण कर लिया है। पार्किंग कर ली है। लोग अपनी मनमानी तरीके से कार और वाहन खड़े करते हैं लोग परेशान हो रहे हैं। जमकर क्षेत्र में अतिक्रमण किया है। इस क्षेत्र में मेनबोर्ड स्कूल और खेलने का मैदान पिछले 10 से 15 सालों से विकास का इंतजार कर रहा है। फिर इसके आसपास बाउंड्री वॉल नहीं होने से यहां आवारा पशुओं का डेरा लगा रहता है और असामाजिक तत्व भी बैठे रहते हैं। खेलने के लिए ग्राउंड नहीं होने से बच्चे यहां वहां परेशान होते रहते हैं। लोगों का कहना है कि मैदान और बाउंड्री बोल नहीं होने से स्कूल परिसर में आवारा मवेशी का डेरा रहता है।

सहायक कलेक्टर ने किया निःशुल्क जेईई व नीट कक्षाओं का अवलोकन

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले के निर्देशन व सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार के मार्गदर्शन में उत्कृष्ट विद्यालय नरसिंहपुर में निःशुल्क जेईई व नीट की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। सहायक कलेक्टर श्री शुभम यादव ने निःशुल्क जेईई व नीट की कक्षाओं का अवलोकन किया। उन्होंने यहां विद्यार्थियों सौम्या नेमा, साक्षी वर्मा, वंश रजक, अनादि पटेल से कोचिंग के संचालन में शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली। विद्यार्थियों ने बताया कि यहां निःशुल्क मार्गदर्शन से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी हेतु कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ रहा और परिवार पर आर्थिक बोझ नहीं पड़ रहा। जिला प्रशासन द्वारा संचालित मार्गदर्शन कक्षा को विद्यार्थियों के हित मे बताया। सहायक कलेक्टर श्री यादव ने फिजिक्स का अध्यापन कराया। उन्होंने गति के समीकरण पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए गति के समीकरण आधारित आकिंक प्रश्न हल कराए और विद्यार्थियों को मोटिवेशन दिया गया। इस दौरान फिजिक्स का अध्यापन श्री इकबाल कुरेशी, प्राचार्य विषय प्रभारी गणित श्री आरके श्रीवास्तव, उमाशि सह प्रभारी गणित श्री अभिनव लखेरा, केमिस्ट्री श्री आरएन रावत, बायोलॉजी श्री बालकृष्ण चौधरी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि उत्कृष्ट विद्यालय नरसिंहपुर में निःशुल्क जेईई व नीट की कक्षाओं का संचालन प्रातः 10 बजे से दोपहर 12.25 बजे तक किया जा रहा है। इसमें विद्यार्थियों को अलग- अलग विषयों के लिए नियुक्त विषय- विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन दिया जा रहा है। जिला शिक्षा अधिकारी श्री एचपी कुर्मी व नोडल अधिकारी प्राचार्य श्री जीएस पटेल द्वारा सतत अवलोकन कर रहे हैं।

तुष्टिकरण की राजनीति को आगे बढ़ा रही ममता सरकार : डॉ. शरद विजयवर्गीय

कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले के समर्थन में जिला भाजपा कार्यालय पर कार्यक्रम आयोजित

धार। कलकत्ता हाई कोर्ट ने ओबीसी कोटा उपश्रेणी के तहत धर्म विशेष के लोगों को दिए आरक्षण को रद्द कर दिया। कोर्ट ने 2010 से 2024 तक पश्चिम बंगाल में समुदाय विशेष को जारी किए गए ओबीसी प्रमाणपत्र को भी रद्द कर दिया है। इन दोनों फैसलों से यह स्पष्ट होता है कि कैसे ममता बनर्जी तुष्टीकरण को आगे बढ़ा रही थी और धर्म के आधार पर आरक्षण देने का काम कर रही थी।

यह बात भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय ने गुरुवार को जिला भाजपा कार्यालय पर कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए कही। हाल ही में कलकत्ता हाईकोर्ट द्वारा पश्चिम बंगाल में धर्म के आधार दिए गए आरक्षण हटाने का फैसला स्वागत योग्य है। संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है की धर्म के आधार पर आरक्षण नही दिया जाएगा, लेकिन पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार ने अपने वोट बैंक की राजनीति के चलते वहा धर्म विशेष के लोगो को खुश करने के लिए ओबीसी का आरक्षण देकर उनके प्रमाण पत्र बनवा दिए जो की गलत है। उन्होंने कहा, कि करीब पांच लाख ओबीसी प्रमाणपत्र कलकत्ता हाईकोर्ट ने रद्द कर दिए । भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस दौरान जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विपिन जी राठौर, जिला कोषाध्यक्ष मनीष प्रधान, मोर्चा जिला महामंत्री अनिल गेहलोत। रविंद्र परिहार, मुन्नालाल राठौड़, सनी होडा कैलाश पिपलोदिया निलेश राठौड़, राजू डोड, प्रताप सिंह, कमलेश बिजवा, भय्यूराम गुप्ता , नितिन चौहान, कमल यादव, भानु प्रताप राजपूत आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे जिन्होंने ममता बनर्जी की घोर निंदा की।

कांच पहले ने तोड़ा, डांट दूसरे भाई को पड़ी

दुकान पर विजय के बजाय चला गया अजय; म.प्र.में जुड़वा भाइयों की कहानी मूवी जैसी

सागर (नप्र)। आपने जुड़वा भाइयों से जुड़ी कई मूवीज देखी होंगी। इसमें एक व्यक्ति कोई काम कर जाता है, कुछ देर बाद उसका हमशक्ल भाई अनजान बन जाता है। इसमें सामने वाला कन्फ्यूज हो जाता है।

कुछ ऐसी ही कहानी सागर के दो जुड़वा भाइयों की है। वैसे, ज्यादातर फिल्मों में दोनों के कैरेक्टर अलग-अलग होते हैं, लेकिन इसमें ऐसा नहीं है। नाम है अजय-विजय नामदेव। उम्र 41 साल। हमशक्ल होने के कारण अच्छे-अच्छे लोग आज भी पहचानने में कन्फ्यूज हो जाते हैं। दोनों के जन्म में सिर्फ एक घंटे का अंतर।

साथ जन्मे, खेले अब प्रोफेशन भी एक जैसा- 10 अक्टूबर 1982 में बड़ा बाजार की रहने वाली आशा नामदेव ने दो बेटों को जन्म दिया। दोनों में एक घंटे का अंतर है। बड़े बेटे का नाम अजय रखा और छोटे का विजय। दोनों की शक्ल एक जैसी है। समय के साथ दोनों बड़े हुए। बचपन में स्कूल में टीचर्स और फ्रेंड्स तक कन्फ्यूज हो जाते थे। लोग पहचान नहीं पाते कि अजय कौन है और विजय कौन। खास है कि दोनों में प्यार ऐसा है कि वे भाई कम और दोस्त ज्यादा हैं। ज्यादातर जगह साथ ही जाते हैं। घर के हर निर्णय मिलकर लेते हैं।

अजय बोला- मैं जोर-जोर से पढ़ता था, विजय सुनता था- बड़े भाई अजय नामदेव ने बताया, बचपन से विजय मेरा हाथ पकड़कर चलता है। जब मैं साइकिल चलाता था, तो विजय पीछे बैठता था। अब मैं बाइक चलाता हूं, तब भी वह पीछे की सीट पर ही बैठता है। घर से बाइक निकालते ही विजय बोलता है कि भैया आप ही बाइक चलाओगे। बचपन से पढ़ाई में मेरी ज्यादा रुचि रही है। दोनों एक ही क्लास पढ़ने के कारण बुक्स का एक ही सेट लेते थे। मैं जोर-जोर से किताबों को पढ़ता था, जबकि विजय सुनता था। अजय ने बताया कि भाई से बड़ा दोस्त नहीं होता। अजय के बगैर विजय अधूरा है और विजय के बगैर अजय अधूरा है।

एग्जाम में समान मार्क्स, एक ही कंपनी में नौकरी- छोटे भाई विजय नामदेव ने बताया, बचपन से ही हम हर काम साथ में करते हैं। स्कूल से लेकर कॉलेज तक एक जैसे मार्क्स हासिल किए। इसके बाद जहां भी नौकरी की, साथ में रहकर की। वर्तमान में प्राइवेट कंपनी में एक ही ऑफिस में, एक ही पद पर काम करते हैं। दोनों ही भाई पेशे से ग्राफिक्स व डिजाइनिंग में मास्टर हैं।

अब जीवन से जुड़े रोचक किस्से

विजय बनकर अजय ने किया किराना दुकान पर काम- विजय नामदेव ने बताया, 'करीब 18 साल की उम्र में मैं बड़ा बाजार क्षेत्र में स्थित किराना दुकान पर काम करता था। दुकान मालिक रोज दुकान में रखे सामान के बारे में बताता था, लेकिन अक्सर मैं दुकान पर नहीं जाता था। मेरे बजाय बड़ा भाई अजय काम करने चला जाता था। दुकानदार को भी शक नहीं होता था। हां, दुकानदार कोई भी सामान उठाने का बोलता था, तो अजय को पता नहीं होता था। इस कारण वह चिल्लाता था कि कल ही तो बताया था। असल में हमशक्ल के बारे में दुकानदार को पता नहीं था। यह सिलसिला करीब एक महीने तक चला। फिर मैंने ही दुकानदार को असलियत बता दी। वह दोनों भाइयों को साथ देखकर दंग रह गया था। इसी तरह, अखबार डालने का काम भी दोनों मिलकर करते थे।

गिलास का सेट अजय से टूटा, डांट विजय को पड़ी

अजय नामदेव ने बताया कि हम करीब 5-6 साल की रही होगी। मुझसे घर में रखा कांच के गिलास का सेट गिरकर टूट गया। कमरे में कांच फैला था, तभी मां वहां आ गई। उन्होंने पिताजी से शिकायत कर दी। मैंने कह दिया विजय ने गिलास तोड़े हैं। मैं तो कमरे में था ही नहीं। इसके बाद पिताजी ने विजय को डांट दिया। दूसरे दिन मैंने हकीकत बता दी। कहा- गिलास मुझसे ही टूटे थे। डांट के डर से विजय का बोल दिया था। खास बात है कि अजय की 6 जून 2020 को जुड़वा बेटियां भी पैदा हुई हैं। दोनों में 7 मिनट का अंतर है। यह दोनों बेटियां भी हमशक्ल हैं।

सीबीआई ने एमपी के दो पुलिस अफसरों को लौटाया

नर्सिंग घोटाले की जांच में रिश्वतखोरी के बाद एक्शन, वापसी के साथ ही होगा निलंबन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश पुलिस महकमे से सीबीआई में प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ रहकर नर्सिंग घोटाले की जांच में रिश्वतखोरी करने वाले एमपी के दो अफसरों की प्रतिनियुक्ति सीबीआई ने खत्म कर दी है। यह दोनों ही अफसर इंस्पेक्टर हैं और दोनों को ही नर्सिंग घोटाले की एफआईआर में आरोपी बनाया जा चुका है। दूसरी ओर पीएचक्यू इन दोनों की अफसरों की वापसी के साथ इन्हें सस्पेंड करने की तैयारी में हैं।

नर्सिंग घोटाले में आरोपी बनाए गए 23 आरोपियों में से 13 की गिरफ्तारी के बाद सीबीआई ने उन्हें रिमांड पर लिया है और एक टीम पूछताछ के लिए दिल्ली ले गई है। इन्हें 29 मई को सीबीआई कोर्ट में पेश किया जाएगा। इस बीच घोटाले की जांच कर रही सीबीआई के अफसरों द्वारा रिश्वतखोरी किए जाने और गलत जांच रिपोर्ट दिए जाने पर हो रही किरकिरी से सीबीआई के सीनियर अफसर खासे नाराज हैं और इसी के चलते एमपी से प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ दो इंस्पेक्टर सुशील कुमार मजोखा और ऋषिकांत असाठे की प्रतिनियुक्ति खत्म कर दी गई है। इन दोनों में से मजोखा की गिरफ्तारी हो चुकी है और वह रिमांड पर हैं जबकि असाठे की गिरफ्तारी होना बाकी है। बताया जाता है कि जिला पुलिस बल से सीबीआई में प्रतिनियुक्ति पर गए मजोखा और एसएएफ कैडर के अधिकारी रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि इन दोनों को ही एमपी में वापसी होते ही सस्पेंड करने की कार्यवाही की जाएगी। दूसरी ओर यह सवाल उठाया जा रहा है कि सीबीआई में इन्हें प्रतिनियुक्ति पर भेजने के पहले अपनाई गई टेस्ट प्रक्रिया भी सवालों के घेरे में है और इसके लिए जिन लोगों ने प्रक्रिया में हिस्सा लिया था, उनसे भी सवाल जवाब हो सकते हैं। गौरतलब है कि नर्सिंग घोटाले में दस लाख रुपए की रिश्वत के साथ गिरफ्तार किए गए इंस्पेक्टर राहुल राज को सीबीआई ने पहले ही बर्खास्त कर दिया है। इस मामले में एक डीएसपी, तीन इंस्पेक्टर समेत सीबीआई के चार अफसर करप्शन के लिए आरोपी बनाए जा चुके हैं।

एम्बुलेंस में महिला का शव छोड़ भागा साथी

भोपाल में मौत के बाद पहुंचा था रतलाम, ड्राइवर ने दी पुलिस को सूचना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हमीदिया हॉस्पिटल की एंबुलेंस से महिला का शव लेकर एक व्यक्ति रतलाम पहुंचा। एंबुलेंस को रावटी की तरफ लेकर गया। फिर रतलाम के सालाखेड़ी की तरफ आकर शव एंबुलेंस में छोड़ कर भाग गया। एंबुलेंस ड्रायवर शव लेकर पुलिस के पास पहुंचा। रतलाम पुलिस ने शव को मेडिकल कॉलेज पहुंचाकर मामले की जांच शुरू की है।

20 मई को रतलाम के मेडिकल कॉलेज में गीता बाई (38) कथित पति आनंद वाल्मिकी को रतलाम के मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था। भर्ती कराने वाले कथित पति आनंद ने बाथरुम में छत का छज्जा गिरने से महिला को घायल होना बताया था। साथ ही, रतलाम के पुलिस थाना औद्योगिक क्षेत्र के शिवनगर का रहने वाला बताया। महिला की हालात खराब होने पर उसे मेडिकल कॉलेज से इंदौर रेफर किया, लेकिन उसे इंदौर नहीं ले जाकर भोपाल हमीदिया हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां मौत हो गई।

गुरुवार रात हमीदिया हॉस्पिटल की एंबुलेस से ड्रायवर निलेश (32) पिता गुलाबसिंह सिलावट निवासी शारदा नगर नारियल खेडा थाना गौतम नगर भोपाल से शव लेकर रतलाम आया। एंबुलेस में शव के साथ एक व्यक्ति था। जो कि एंबुलेस को पहले रावटी की तरफ लेकर गया। इसके बाद रतलाम सालाखेड़ी की तरफ लेकर आया। इधर-उधर घूमता रहा। बाद में शव के साथ आया व्यक्ति सालाखेड़ी के पास एंबुलेंस छोड़ गायब हो गया। एंबुलेंस ड्रायवर रात में सालाखेड़ी पुलिस चौकी पहुंचा। वहां घटना की जानकारी दी। इसके बाद शव को रात में ही मेडिकल कॉलेज भेजा गया। थाना औद्योगिक क्षेत्र ने मर्ग कायम किया। थाना प्रभारी राजेंद्र वर्मा ने बताया कि महिला को बाथरुम में छज्जा गिरने से घायल होने पर संबंधित ने पत्नी बताते हुए भर्ती किया था। संबंधित ने उस समय रतलाम का निवासी होना बताया था। मर्ग कायम कर जांच कर रहे हैं।

पुरोहित समिति अध्यक्ष के निधन के पहले का वीडियो

महाकाल मंदिर जाते समय साइलेंट अटैक आया; दुकान पर बैठे, गश खाकर गिर पड़े

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर पुरोहित समिति के अध्यक्ष अशोक शर्मा का गुरुवार को 63 साल की आयु में निधन हो गया। वे महाकाल मंदिर जाने के लिए सुबह 9 बजे घर से निकले थे। उनके निधन से पहले का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है।

वीडियो में वे महाकाल मंदिर जाते हुए दिखाई दे रहे हैं। वे चलते - चलते ठहरे और मोनू तिवारी की दुकान के बाहर बैठ गए। इसके कुछ ही देर बाद वे चक्कर खाकर गिर पड़े। धर्मेंद्र पंड्या और दूसरे लोग मदद के लिए उनकी तरफ दौड़े। अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। 63 साल के अशोक शर्मा दो दिन से अस्वस्थ थे। वीडियो में मंदिर जाते समय थके हुए से दिख रहे हैं। महाकाल मंदिर के पुरोहित अशोक शर्मा का दो दिन से स्वास्थ्य खराब चल रहा था। उन्हें शुगर भी थी। गुरुवार सुबह वे गुदरी स्थित घर से चौबीस खंबा माता मंदिर होते हुए महाकाल मंदिर जा रहे थे। वे रोजाना सुबह घर से यजमान को पूजा कराने घर से दूध और पूजन सामग्री लेकर निकलते थे। निधन की वजह साइलेंट अटैक बताई जा रही है।

महिला किराएदार और नाबालिग ने दादी का गला घोंटा

शव सीढ़ियों पर रखा, चूड़ियां पहनाईं, बताया- गिर गई; अफेयर का पता लगने पर मर्डर

सागर (नप्र)। सागर में नाबालिग पोते ने 60 साल की दादी का तौलिए से गला घोंटकर हत्या कर दी। महिला किराएदार भी आरोपी है। बुजुर्ग ने नाबालिग और महिला को आपत्तिजनक हालत में देख लिया था। उन्होंने परिवार को अफेयर के बारे में बताने की बात कही थी। इस पर उनकी हत्या कर दी गई।

आरोपियों से झड़प के दौरान बुजुर्ग की चूड़ियां टूट गई थीं। आरोपी महिला ने उन्हें हटाकर अपने हाथ की चूड़ियां पहना दीं। शव सीढ़ियों पर रख दिया। घटना के समय घर में बुजुर्ग अकेली थीं। आरोपियों ने परिवार को बताया कि वो गिरकर बेहोश हो गईं। घटना मकरोनिया में 21 मई की है। पुलिस ने नाबालिग और महिला को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस ने बताया, 21 मई को जिला अस्पताल से सूचना मिली थी। बुजुर्ग को परिवार वाले अस्पताल लेकर पहुंचे थे। डॉक्टर ने चेकअप के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस को परिवार ने बताया था कि वे सीढ़ियों से गिरकर बेहोश हो गई थीं। लेकिन, डॉक्टर ने पुलिस को जब बताया कि बुजुर्ग के गले पर निशान मिले हैं, तो शव का पोस्टमॉर्टम कराया गया। 22 मई को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में बुजुर्ग की गला घोंटकर हत्या होना पाया गया। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की।

म.प्र.में पर्यटकों का रिकॉर्ड...एक साल में 11 करोड़ आए

उज्जैन में सबसे ज्यादा 5.28 करोड़ आए; मैहर, इंदौर, चित्रकूट-ओंकारेश्वर टॉप-5 में

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पर्यटकों की संख्या ने नया रिकॉर्ड बनाया है। साल 2023 में एमपी में देशी-विदेशी 11 करोड़ से ज्यादा पर्यटक पहुंचे। पहली पसंद उज्जैन रहा। बाबा महाकाल के दर्शन और महाकाल लोक देखने के लिए सबसे ज्यादा 5.28 करोड़ लोग पहुंचे। इस साल भी अप्रैल-मई में करीब 45 लाख भक्त आ चुके हैं। मैहर, इंदौर, चित्रकूट और ओंकारेंश्वर भी पसंदीदा जगहों में टॉप-5 में है। भोपाल 10वें नंबर पर रहा।

ऐतिहासिक धरोहरों, गौरवशाली इतिहास, प्राकृतिक सौंदर्य, विविध वन्यजीव एवं आध्यात्मिक अनुभव के लिए एमपी देश-दुनिया के लोगों की पसंद बन रहा है। यही कारण है कि साल दर साल टूरिस्टों की संख्या भी बढ़ रही है।

एमपी टूरिज्म बोर्ड ने साल 2023 के आंकड़े जारी किए हैं। इसके अनुसार- जनवरी से दिसंबर 2023 तक प्रदेश में 11 करोड़ 21 लाख पर्यटक पहुंचे। जिनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या 1 लाख 83 हजार रही। 2019 में कोविड प्रतिबंध लागू होने से पहले कुल 8 करोड़ 90 लाख 35 हजार 97 पर्यटकों का आगमन हुआ था। 2022 में पर्यटकों की संख्या 3 करोड़ 41 लाख 38 हजार 757 संख्या रही।

स्थापना दिवस

24 मई को मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम का स्थापना दिवस था। इसी दिन को मध्यप्रदेश पर्यटन दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं प्रबंध संचालक म.प्र. टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि, प्रदेश में पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि हो रही है। प्रदेश में बुनियादी ढांचे के विकास, धार्मिक पर्यटन में वृद्धि के साथ ही हमारी अनूठी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और सभी आगंतुकों के लिए एक यादगार अनुभव तय करने के प्रयासों का यह प्रमाण है।

धार्मिक स्थलों के विकास से और बढ़ेगी संख्या

प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ 10 गंतव्यों में से पांच गंतव्य धार्मिक स्थल उज्जैन, मैहर, चित्रकूट, ओंकारेश्वर और सलकनपुर है। प्रमुख सचिव शुक्ला के मुताबिक, कई लोग धार्मिक स्थलों पर जाकर मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव करते हैं। धार्मिक स्थलों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। यह स्थल प्राचीन इतिहास, वास्तुकला और संस्कृति का अद्भुत मिश्रण होते हैं।

शिवशेखर शुक्ला ने बताया, उज्जैन में महाकाल लोक, ओंकारेश्वर में एकात्म धाम जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं ने भी प्रदेश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने में मदद की है। शुक्ला के अनुसार, सलकनपुर में देवी लोक, ओरछा में राजा राम लोक, छिंदवाड़ा में हनुमान लोक, चित्रकूट में श्रीराम वनगमन पथ जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाएं पूर्ण होने के बाद निश्चित ही प्रदेश में पर्यटकों की संख्या में ओर वृद्धि होगी।

गर्मी की छुट्टियों में स्कूल बंद.. फिर भी बंट रहा मिड-डे-मील

म.प्र.के 23 जिलों में गड़बड़ी, केंद्र सरकार की नाराजगी के बाद जांच के निर्देश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के स्कूलों में अभी गर्मी की छुट्टियां चल रही है। 1 मई से स्कूल बंद है, जो 15 जून के बाद खुलेंगे। बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं, उन्हें मिड डे मील भी नहीं बांटा जा रहा है। लेकिन, 23 जिले ऐसे हैं जहां अब भी मध्याह्न भोजन बांटने की बात कही जा रही है। अवकाश के दिनों को छोड़कर इसका डाटा मध्याह्न भोजन के पोर्टल पर लगातार अपलोड किया जा रहा है।

ये गड़बड़ी केंद्र सरकार ने पकड़ी है। जिसके बाद एमपी सरकार को पत्र लिखा गया और दोषी शाला प्रभारियों पर एक्शन लेने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही कलेक्टर्स को भी पत्र भेजकर इसकी जांच कराने के लिए कहा है।

जिला पंचायत सीईओ को लिखा पत्र

प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण कार्यक्रम के ऑटोमेटेड मॉनिटरिंग सिस्टम के तहत पोर्टल के जरिए मध्याह्न भोजन वितरण की रिपोर्टिंग की जाती है। पीएम पोषण शक्ति निर्माण कार्यक्रम के राज्य समन्वयक ने इसका खुलासा होने के बाद 16 मई को संबंधित जिलों के सीईओ, जिला पंचायत को पत्र लिखा। जिसमें कहा है कि स्कूल शिक्षा विभाग के तहत संचालित स्कूलों में 1 मई 2024 से 15 जून 2024 तक ग्रीष्मकालीन अवकाश घोषित हैं। इस अवकाश अवधि में पीएम पोषण का वितरण नहीं किया जाना है।

इस पत्र में यह भी कहा है कि चूंकि अवकाश के चलते स्कूलों में बच्चों का आना-जाना बंद है। इसलिए पीएम पोषण वितरण नहीं करने के स्पष्ट निर्देश है। इसके बाद भी संबंधित जिलों के शाला प्रभारियों ने अवकाश अवधि में मध्याह्न भोजन वितरण की रिपोर्टिंग एएमएस पोर्टल पर की है। यह पूरी तरह से गलत है। इसे लेकर भारत सरकार ने भी नाराजगी जताई है। इसलिए गलत रिपोर्टिंग करने वाले शाला प्रभारियों के खिलाफ कार्रवाई करें। इसकी जानकारी पीएम पोषण शक्ति निर्माण परिषद को दी जाए।

इन जिलों में बंट रहा है छुट्टी में भी मध्याह्न भोजन

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान जिन जिलों में पीएम पोषण कार्यक्रम के तहत मध्याह्न भोजन बांटा जा रहा है उसमें शामिल 23 जिलों में बड़वानी, सतना, रायसेन, भिंड, गुना, जबलपुर, आगर मालवा, दमोह, झाबुआ, मंडला, मंदसौर, बालाघाट, बैतूल, भोपाल और डिंडोरी शामिल हैं। इसके अलावा नरसिंहपुर, रतलाम, सागर, सिवनी, शहडोल, श्योपुर, शिवपुरी और टीकमगढ़ में भी मध्याह्न भोजन बांटने की जानकारी पोर्टल पर दर्ज की जा रही है जहां के सीईओ जिला पंचायत को जांच और कार्रवाई के लिए कहा गया है।

ऐसे होता है समूहों के रुपए देने और राशन देने का काम

पोषण कार्यक्रम से जुड़े अफसरों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए 5 रुपए और माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के लिए समूहों को 7 रुपए प्रति बच्चे के हिसाब से मानदेय दिया जाता है जिसमें दाल और अन्य सामग्री का इंतजाम करना पड़ता है। इसके अलावा प्रति बच्चा 100 ग्राम चावल और 150 ग्राम आटा भी दिया जाता है। इसका भुगतान केंद्र से मिलने वाली राशि के आधार पर किया जाता है।

कमलनाथ बोले- नर्सिंग घोटाले ने करप्शन के सारे रिकॉर्ड तोड़े

कहा- जांच के नाम पर जांच एजेंसियों ने किया जमकर भ्रष्टाचार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के बहुचर्चित नर्सिंग घोटाले की जांच कर रहे सीबीआई अफसरों के रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किए जाने के बाद अब विपक्ष घोटालों की जांच पर सवाल उठा रहे हैं। पूर्व सीएम कमलनाथ ने ट्वीट में लिखा- मध्य प्रदेश का नर्सिंग कॉलेज घोटाला भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ रहा है। अब यह साफ दिख रहा है कि राज्य और केंद्र की जांच एजेंसियों ने जांच के नाम पर जमकर भ्रष्टाचार किया। इससे यह भी पता चलता है कि मध्य प्रदेश के व्यापमं घोटाले में कैसे लीपापोती की गई होगी?

व्यापमं, पटवारी भर्ती और महाकाल लोक में कैसे गुनहगारों को बचाया गया होगा- कमलनाथ ने अपने ट्वीट में आगे लिखा- पटवारी भर्ती घोटाले को कैसे क्लीन चिट मिली होगी? महाकाल लोक घोटाले के गुनहगारों को कैसे बचाया गया होगा? जांच में इस तरह का भ्रष्टाचार बिना ऊपर के संरक्षण के नहीं हो सकता। सच्चाई तभी सामने आ सकती है जब उच्च न्यायालय की निगरानी में निष्पक्ष जांच करायी जाए। नर्सिंग घोटाले की जांच की तस्वीर सामने आने पर पता लग गया कि व्यापमं घोटाले की जांच कैसी हुई होगी?

अरुण यादव ने पूछा- व्यापमं महाघोटाले में कालेधन का टेम्पो कहां-कहां पहुंचा था- पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने ट्वीट में लिखा- नर्सिंग घोटाले में हाईकोर्ट के निर्देश के बाद हुई सीबीआई जांच (राजनैतिक संरक्षण से हुए महाभ्रष्टों और व्यापक स्तर पर हुए भ्रष्टाचार) की तस्वीर सामने आने के बाद अब यह स्पष्ट हो चुका है कि व्यापमं महाघोटाले की जांच किस तरह हुई होगी? कालेधन का टेम्पो कहां - कहां पहुंचा होगा?

लिहाजा,अब ज़रूरी है कि मप्र के नए माननीय न्यायाधिपति जी स्वतः संज्ञान लेकर नर्सिंग और व्यापमं दोनों ही महाघोटालों की जांच की भी जांच करवाएं क्योंकि भ्रष्टाचार की नदी देश एवं प्रदेश में अब समुंदर के रूप में तब्दील हो चुकी है और देश-प्रदेशवासियों का विश्वास अब सिर्फ और सिर्फ न्यायपालिका पर ही है। मुझे यकीन है कि अब न्यायपालिका ही इन वास्तविक भ्रष्टाचारियों के चेहरों को बेनकाब कर इनके मंसूबों पर कालिख पोतेगी।

भोपाल में लिफ्ट लगाने के नाम पर ठगी

आरोपी ने चेक से ली करीब 4 लाख की पेमेंट, पुलिस तलाश में जुटी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बागसेवनियां क्षेत्र से ठगी का मामला सामने आया है। लिफ्ट लगाने के नाम पर आरोपी ने एक युवक से करीब 4 लाख रुपए की धोखाधड़ी की है। बताया जा रहा है कि आरोपी ने चेक के माध्यम से पैसों का लेन देन किया था। पैसे आने के बाद आरोपी ने युवक का फोन उठाना बंद कर दिया। इस घटना की जानकारी युवक ने पुलिस थाने में दर्ज कराई है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 420, 406 के तहत मामला दर्ज कर कारवाई शुरू कर दी है। पुलिस युवक की तलाश में जुट गई है।

यह है पूरा मामला- बागसेवनियां पुलिस के अनुसार गोविंद सिंह तेजपाल का मकान एम्राल्ड सिटी में बन रहा है। उन्हें अपने डूप्लैक्स में लिफ्ट लगवानी थी। वे कई दिनों से इसके लिए जानकारी ले रहे थे। उन्हें कुछ समय पहले परिचित से पता लगा कि आरोपी सत्यशील बालखेड़े लिफ्ट लगाने का काम करता है। उन्होंने सत्यशील को कॉल कर घर बुलाया।आरोपी ने घर का पूरा मुआयना किया। घर का पूरी तरह से मुआयना करने के बाद आरोपी ने गोविंद सिंह से 5 लाख 20 हजार रुपए की मांग की। गोविंद सिंह ने आरोपी को चेक के माध्यम से 3 लाख 52 हजार रुपए की आधी पेमेंट की थी।

भोपाल में पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी और संघम पिरामिड का कार्यक्रम

शाकाहार रैली निकाली, जीवदया का दिया संदेश

भोपाल (नप्र)। पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी भोपाल और संघम पिरामिड ने गुरुवार को शहर में शाकाहार रैली निकालकर जीवदया का संदेश दिया। यह रैली कोलार स्थित पैलेस आर्केड वेस्टर्न होटल के पास से शुरू होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए पैलेस आर्केड के पार्क नंबर 4 पर खत्म हुई। इस अवसर पर जीवन्या का संदेश देते हुए शाकाहारी होने के फायदे के स्लोगन वाली तख्तियों को लेकर साधक चल रहे थे। रैली की आयोजक वंदना जैन ने बताया कि आध्यात्मिक उन्नति की पहली शर्त शाकाहारी होना है। वहीं संघम पिरामिड में शाम 5 से 8 बजे तक सामूहिक ध्यान का आयोजन किया गया।

नर्मदापुरम में गर्मी से 3 छात्राओं की तबीयत बिगड़ी

आधे प्रदेश में लू का अलर्ट; ग्वालियर-चंबल की गर्मी,मालवा-निमाड़ में शिफ्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में भीषण गर्मी पड़ रही है। 2-3 दिन से ग्वालियर-चंबल की गर्मी मालवा-निमाड़ की ओर भी शिफ्ट हुई है। इस वजह से इंदौर, उज्जैन, खंडवा, शाजापुर भी भट्टी की तरह तप रहे हैं। यहां तापमान रिकॉर्ड 44 से 46 डिग्री के पार जा पहुंचा है।

गुरुवार को गुना सबसे हॉट रहा। यहां टेम्प्रेचर रिकॉर्ड 46.6 डिग्री दर्ज किया गया। भोपाल, इंदौर और उज्जैन सीजन के सबसे गर्म रहे। ऐसा ही मौसम शुक्रवार को भी बना रहा। प्रदेश के आधे हिस्से में लू का अलर्ट भी है। मौसम विभाग ने बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट में आंधी-बारिश का अलर्ट भी जारी किया है।

नर्मदापुरम के पवारखेड़ा में एग्रीकल्चर कॉलेज की तीन छात्राओं की तबीयत गुरुवार रात बिगड़ गई। रात 9.30 बजे छात्राओं को हॉस्टल स्टाफ जिला अस्पताल लेकर आया। एक छात्रा बेहोशी की हालत में थी। छात्राओं को उल्टी और डिहाइड्रेशन की शिकायत है। इमरजेंसी ड्यूटी डॉक्टर राजेश धाकड़ ने बताया कि गर्मी की वजह से छात्राओं की तबीयत बिगड़ी है। नर्मदापुरम में गुरुवार दिन का तापमान 40.7 डिग्री रहा। नर्मदापुरम में गर्मी की वजह से तीन छात्राओं की तबीयत बिगड़ गई। उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मालवा - निमाड़ में भी भीषण गर्मी...- भोपाल के सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि 4-5 दिन पहले तक एक ट्रफ लाइन तेलंगाना से पूर्वी मध्यप्रदेश तक बनी थी, जो गुजर गई है। ड्राइ वेस्टर्न डिस्टरबेंस भी गुजर रहा था। इस वजह से उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी गर्म हवाएं प्रदेश के उत्तरी हिस्से को ज्यादा प्रभावित कर रही थीं। पिछले 24 घंटे की बात करें, तो राजस्थान के ऊपर साइक्लोनिक सर्कुलेशन है। इस वजह से इंदौर, उज्जैन संभाग में पश्चिमी हवाएं प्रभावी हैं। इस कारण कुछ जिलों में लू का असर है। ग्वालियर-चंबल के साथ मालवा-निमाड़ में भी भीषण गर्मी है। मई के आखिरी तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा।